पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

आपराधिक अपील (खंड पीठ) सं. 173/2016

थाना कांड संख्या-85 वर्ष-1992 थाना-त्रिवेणीगंज जिला-सुपौल से उत्पन्न

==========

1. भूपेंद्र यादव, पुत्र स्वर्गीय डोमी यादव
2. भागवत यादव, पुत्र स्वर्गीय डोमी यादव
3. राजेंद्र यादव, पुत्र भागवत यादव
4. लक्ष्मी यादव, पुत्र स्वर्गीय डोमी यादव
5. बिनोद यादव, पुत्र लक्ष्मी यादव
6. योगेंद्र यादव, पुत्र स्वर्गीय नोताई यादव
7. महेंद्र यादव, पुत्र स्वर्गीय नटाई यादव

सभी निवासी ग्राम माचा थाना-त्रिवेणीगंज जिला- सुपौल

....अपीलकर्ता/ओं

बनाम

बिहार राज्य

....प्रतिवादी/ओं

==========

साथ में

आपराधिक अपील (खंड पीठ) सं. 315/2016

थाना कांड संख्या-85 वर्ष-1992 थाना-त्रिवेणीगंज जिला-सुपौल से उत्पन्न

==========

विद्यानंद यादव, पुत्र स्वर्गीय नटाई यादव, निवासी-गाँव-माछा, थाना-त्रिवेणीगंज, जिला-सुपौल

.... अपीलार्थी/ओं

बनाम

बिहार राज्य

....प्रतिवादी/ओं

==========

उपस्थिति:

(आपराधिक अपील (खंड पीठ) संख्या 173/2016 में)

अपीलार्थी/ओं के लिए	:	श्री आलोक कुमार, वरिष्ठ अधिवक्ता
		श्री बीरेंद्र कुमार सिंह, अधिवक्ता
		श्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह, अधिवक्ता
		श्री नीरज कुमार, अधिवक्ता
उत्तरदाता/ओं के लिए	:	श्री दिलीप कुमार सिन्हा, सा.लो.अ.

(आपराधिक अपील (खंड पीठ) सं. 315/2016)

अपीलार्थी/ओं के लिए	:	श्री आलोक कुमार, वरिष्ठ अधिवक्ता
		श्री बीरेंद्र कुमार सिंह, अधिवक्ता
		श्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह, अधिवक्ता
		श्री नीरज कुमार, अधिवक्ता
उत्तरदाता/ओं के लिए	:	श्री दिलीप कुमार सिन्हा, सा.लो.अ.

==========

अधिनियम/धाराएं/नियम:

• दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 374(2), 389 (1)

• भारतीय दंड संहिता की धाराएं 147, 148, 149, 323, 324, 326, 307, 302, 120बी, 447 और 114

• शस्त्र अधिनियम की धारा 27

संदर्भित मामले:

• मुन्ना लाल बनाम उत्तर प्रदेश राज्य, (2023) 3 एससीआर 224 में रिपोर्ट किया गया

• रविश्वर मांझी और अन्य बनाम झारखंड राज्य, (2008) 16 एससीसी 561 में रिपोर्ट किया गया

• परवीन उर्फ सोनू बनाम। हरियाणा राज्य, 2021 एससीसी ऑनलाइन एससी 1184 में रिपोर्ट किया गया

• उत्तर प्रदेश राज्य बनाम कृष्णा मास्टर और अन्य, एआईआर 2010 एससी 3071 में रिपोर्ट किया गया

• मध्य प्रदेश राज्य बनाम दल सिंह और अन्य, 2013 (14) एससीसी 159 में रिपोर्ट किया गया

• सेल्वमनी बनाम राज्य प्रतिनिधि पुलिस निरीक्षक द्वारा, 2024 एससीसी ऑनलाइन एससी 837 में रिपोर्ट किया गया

• बिहारी प्रसाद बनाम बिहार राज्य, (1996) 2 एससीसी 317 में रिपोर्ट किया गया

• बहादुर नायक बनाम बिहार राज्य, (2000) 9 एससीसी 153 में रिपोर्ट किया गया

• कृष्णा मोची और अन्य बनाम बिहार राज्य, (2002) 6 एससीसी 81 में रिपोर्ट किया गया

अपील– उस निर्णय के विरुद्ध दायर की गई जिसमें ट्रायल कोर्ट ने अपीलकर्ताओं को भारतीय दंड संहिता की धारा 147, 148, 323, 324, 307 एवं 302/120बी के तहत अपराध करने के लिए दोषी ठहराया।

निर्णय– अभियोजन पक्ष के साक्ष्य में यदि कोई मामूली अंतर या विरोधाभास है, तो वह महत्वहीन होता है और जब अभियोजन ने आरोपितों के अपराध सिद्ध करने के लिए पर्याप्त और प्रबल आपत्तिजनक साक्ष्य प्रस्तुत किए हों, तब उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। (पैरा 35)

प्रथम सूचना रिपोर्ट में दूसरे मामले के अपीलकर्ता द्वारा मृतक पर गोली चलाने की बात का विवरण प्रत्यक्षदर्शी साक्ष्य द्वारा पूर्ण रूप से समर्थित है और यह तथ्य चिकित्सीय साक्ष्य से भी पुष्ट होता है। (पैरा 36)

जब किसी प्रत्यक्षदर्शी की गवाही की बात आती है तो मात्र साक्षियों की संख्या नहीं, बल्कि साक्ष्य की गुणवत्ता ही महत्वपूर्ण होती है, चाहे वह साक्षी एकमात्र ही क्यों न हो। दूसरे मामले के अपीलकर्ता ने मृतक के सीने पर गोली चलाई जिससे उसकी मृत्यु हुई,

किंतु ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है जिससे यह सिद्ध हो कि उसने सूचक या किसी अन्य परिजन पर हमला किया हो। (पैरा 37)

जहाँ तक पहले मामले के अपीलकर्ताओं का संबंध है, यद्यपि उनमें से कुछ पर सूचक और उसकी पत्नी पर हमला करने का आरोप है, लेकिन अभियोजन ने न तो किसी घायल साक्षी की चोट संबंधी रिपोर्ट प्रदर्शित की है और न ही ऐसे किसी डॉक्टर को प्रस्तुत किया है जिसने उन्हें इलाज दिया हो। इस प्रकार रिकॉर्ड में ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है जिससे उनकी संलिप्तता घटना में सिद्ध हो सके। विशेष रूप से एक साक्षी की गवाही, जिसमें उसने स्पष्ट रूप से कहा कि दूसरे मामले के अपीलकर्ता को छोड़कर किसी अन्य आरोपी ने मृतक पर हमला नहीं किया, और शेष आरोपी घटनास्थल से दूर खड़े थे, यह सिद्ध करता है कि पहले मामले के अपीलकर्ताओं की घटना में कोई भूमिका नहीं थी। साथ ही, न तो कोई साक्ष्य "मन की बैठक" को दर्शाता है, और न ही यह सिद्ध होता है कि उन्होंने किसी अवैध कार्य हेतु कोई पूर्व सहमति बनाई थी। (पैरा 37)

यह तर्क प्रस्तुत किया गया कि जाँच अधिकारी की गवाही न होना अपीलकर्ताओं के लिए हानिकर हुआ। इस विषय में यह कहना पर्याप्त होगा कि बिना यह दर्शाए कि इससे बचाव पक्ष को कोई वास्तविक क्षति हुई है, मात्र यह तर्क कोई ठोस आधार नहीं बनाता। – बचाव पक्ष सूचक व सूचक के पुत्र की मौखिक गवाही पर कोई संदेह उत्पन्न करने में विफल रहा है। (पैरा 38)

जहाँ तक यह प्रश्न है कि प्रयोग किए गए हथियार की प्रकृति अथवा घटनास्थल का निर्धारण नहीं हुआ, तो न्यायालय ने यह पाया कि उपलब्ध प्रबल साक्ष्यों के आलोक में यह मुद्दा कोई विशेष महत्व नहीं रखता। (पैरा 40)

जहाँ तक यह तर्क है कि फर्दबेयान को न तो प्रदर्शित किया गया और न ही सिद्ध किया गया, न्यायालय ने यह पाया कि एक साक्षी ने औपचारिक एफआईआर को सिद्ध किया है और त्रिवेणगंज थाना के तत्समय के सब-इंस्पेक्टर के हस्ताक्षर की पहचान की है, जिसे प्रदर्शित भी किया गया है, और फर्दबेयान उसी का हिस्सा है। – केवल इस आधार पर कि फर्दबेयान प्रदर्शित नहीं किया गया, अपीलकर्ताओं को कोई क्षति नहीं हुई है और न ही इससे कोई भौतिक अंतर उत्पन्न होता है। (पैरा 40)

संदेह का लाभ देते हुए, न्यायालय ने पहले मामले के सभी अपीलकर्ताओं, अर्थात् आपराधिक अपील (डिवीजन बेंच) संख्या 173/2016 के अपीलकर्ताओं को दोषमुक्त किया। (पैरा 41)

जहाँ तक दूसरे मामले के अपीलकर्ता का संबंध है, न्यायालय ने पाया कि इस अपीलकर्ता के दोष को लेकर कोई संदेह उत्पन्न करने का कोई कारण नहीं है, और उसका अपराध सभी उचित संदेहों से परे सिद्ध हो चुका है। (पैरा 42)

==========

पटना उच्च न्यायालय का निर्णय आदेश

==========

कोरमः माननीय न्यायमूर्ति श्री मोहित कुमार शाह
और
माननीय न्यायमूर्ति श्री नानी तागिया
सीएवी निर्णय
(प्रतिः माननीय न्यायमूर्ति श्री मोहित कुमार शाह)
तारीखः 04-04-2025

1. दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 389 (1) के साथ धारा 374(2) के अंतर्गत प्रस्तुत उपरोक्त अपीलें (जिसे आगे "दं. प्र. सं." कहा जाएगा) सत्र विचारण संख्या 138/1994 (त्रिवेणीगंज थाना कांड संख्या 85/1992 से उत्पन्न) में विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश द्वितीय न्यायालय, सुपौल (जिसे आगे "विद्वान विचारण न्यायाधीश" कहा जाएगा) के द्वारा पारित दोषसिद्धि के एक ही निर्णय दिनांक 29.01.2016 और 09.02.2016 के सजा के आदेश से उत्पन्न हुई हैं, इसलिए इन अपीलों की एक साथ सुनवाई की गई है और वर्तमान सामान्य निर्णय और आदेश द्वारा इनका निपटारा किया जा रहा है। दिनांक 29.01.2016 के उक्त निर्णय द्वारा, विद्वान विचारण न्यायाधीश ने दोनों मामलों के उपरोक्त अपीलकर्ताओं को भारतीय दंड संहिता की धारा 147, 148, 323, 324, 307 और 302/120 बी (जिसे आगे "भा.द.सं." कहा जाएगा) के तहत अपराध करने के लिए दोषी ठहराया है और जहां तक दूसरे मामले के अपीलकर्ता विद्यानंद यादव का संबंध है, उन्हें भी शस्त्र अधिनियम, 1959 की धारा 27

के तहत अपराध करने के लिए दोषी ठहराया गया है। दिनांक 09.02.2016 के सजा के आदेश द्वारा, अपीलकर्ताओं को भा.द.सं. की धारा 147 के तहत दो साल के लिए कठोर कारावास (जिसे आगे "आरआई" कहा जाएगा), भा.द.सं. की धारा 148 के तहत तीन साल के लिए कठोर कारावास, भा.द.सं. के तहत छह महीने के लिए कठोर कारावास की सजा सुनाई गई है। धारा 120 बी, धारा 323 के तहत 1 वर्ष की सजा, धारा 324 के तहत 3 वर्ष की सजा, धारा 307 के तहत 10 वर्ष की सजा तथा 10,000 रुपये जुर्माना तथा धारा 302 के तहत आजीवन कारावास तथा 10,000 रुपये जुर्माना लगाया गया है तथा ऐसा न करने पर अपीलकर्ताओं को छह माह तक हिरासत में रखने का निर्देश दिया गया है। जहां तक दूसरे मामले के अपीलकर्ता विद्यानंद यादव का सवाल है, उन्हें भी शस्त्र अधिनियम, 1959 की धारा 27 के तहत 3 वर्ष की सजा सुनाई गई है। सजाएं साथ-साथ चलने का आदेश दिया गया है।

2. मामले का संक्षिप्त तथ्य यह है कि दिनांक 05.09.1992 को रवि यादव (सुचक) का फर्दबयान त्रिवेणीगंज थाना के अवर निरीक्षक द्वारा 10:45 बजे प्रातः दर्ज किया गया था। फर्दबयान में सुचक ने कहा है कि लगभग 3-4 वर्ष पूर्व उसने हनुमान अग्रवाल से 1 बीघा, 18 कट्ठा, 10 धुर जमीन खरीदी थी, लेकिन उक्त जमीन पर नटई यादव द्वारा पूर्व से ही ठेका के आधार पर खेती की जा रही थी, इसलिए उक्त जमीन खरीदने के बाद भी नटई यादव ने सुचक को खेत जोतने नहीं दिया। उक्त विवाद के संबंध में अगल-बगल के गांवों के पंचों ने मिलकर पंचायती की थी, यह तय हुआ कि सुचक नटई यादव को 5000/- रुपये की धनराशि देगा, जिस पर नटई यादव तैयार हो गया और फिर सुचक ने पंचों के पास 5,000/- रुपये की धनराशि जमा कर दी। सुचक ने यह भी बताया है कि मुख्य पंच कुशवाहा पंचायत के मुखिया शिवनंदन यादव थे। सुचक ने आगे बताया है कि उन्होंने प्रश्नगत खेत का कुछ हिस्सा जोत लिया था, उसके बाद उनके पुत्र दिलीप कुमार यादव शेष जमीन जोतने के लिए प्रश्नगत जमीन

पर गए थे। इसी बीच उन्हें पता चला कि पंचों के पास जमा कराई गई रकम नटई यादव ने ले ली है। सुचक ने आगे बताया है कि आज सुबह जब उनका पुत्र खेत जोतने गया था, तब उन्हें पता चला कि नटई यादव, उनके पुत्र और अन्य लोग भी प्रश्नगत खेत पर गए थे और उन्हें खेत जोतने से मना किया था। इसके बाद सुचक और उनकी पत्नी मूर्ति देवी लगभग 8 बजे खेत पर गए थे, जहां उन्होंने देखा कि मौके पर काफी लोग एकत्रित हैं, जिसके बाद उन्होंने अपने पुत्र दिलीप कुमार यादव से कहा कि चूंकि उक्त लोग हथियार से लैस हैं, इसलिए वह *हल* खोल दे, क्योंकि वे उसे मार सकते हैं, जिसके बाद सुचक के पुत्र ने हल खोल दिया और हल को कंधे पर रखकर अपने घर की ओर जाने लगा, लेकिन इसी बीच विद्यानंद यादव (द्वितीय मामले के अपीलकर्ता) ने अपनी कमर से पिस्तौल निकालकर सुचक के पुत्र के सीने पर गोली चला दी, जिससे सुचक का पुत्र जमीन पर गिर गया, जिसके बाद भूपेंद्र यादव (प्रथम मामले के अपीलकर्ता संख्या 1) ने सुचक के पेट में *भाला* से हमला किया, लेकिन *भाला* सुचक की पसलियों में लगा, जिससे वह घायल हो गया, जिससे जख़्म से खून निकलने लगा। इसी बीच योगेन्द्र यादव (प्रथम कांड के अपीलकर्ता संख्या 6) ने *लाठी* से सुचक के सिर पर हमला कर दिया, जिससे उसका सिर फट गया। भागवत यादव (द्वितीय कांड के अपीलकर्ता संख्या 2) एवं भूपेन्द्र यादव (प्रथम कांड के अपीलकर्ता संख्या 1) भाला से लैस होकर तथा लक्ष्मी यादव (प्रथम कांड के अपीलकर्ता संख्या 4) जो *लाठी* लिए हुए थे, तथा राजन यादव एवं बिनोद यादव (प्रथम कांड के अपीलकर्ता संख्या 5), योगी उर्फ योगेन्द्र यादव (प्रथम कांड के अपीलकर्ता संख्या 6), मनोज यादव एवं सरोज यादव जो *लाठी* से लैस थे, ने भी हमला करना शुरू कर दिया। जितेन्द्र कुमार अरविंद (पूर्व मुखिया) एवं महेन्द्र यादव (प्रथम कांड के अपीलकर्ता संख्या 7) के गार्ड तीर से लैस थे। सुचक ने आगे बताया है कि नटई यादव वहां उपस्थित सभी अभियुक्तों को पिता-पुत्र की हत्या करने के लिए उकसा रहा था। सुचक ने आगे बताया कि *भाला*

लगने से वह भी अपने पुत्र दिलीप कुमार से कुछ दूरी पर जमीन पर गिर गया था। इसके बाद सरोज यादव, जितेन्द्र कुमार अरविंद और लक्ष्मी यादव (प्रथम मामले के अपीलार्थी संख्या 4) ने सुचक की पत्नी मूर्ति देवी पर भी *लाठी* से हमला करना शुरू कर दिया था। तब आरोपियों ने कहा था कि दिलीप कुमार यादव की मौत हो गई है, जिसके बाद सभी आरोपी भाग गए थे, जिसके बाद सुचक का छोटा पुत्र राजेश जो कुछ दूरी पर छिपा हुआ था, वहां पहुंचा और उसने कहा कि उसके भाई की हत्या कर दी गई है। इसके बाद सह-ग्रामीण नुनू लाल यादव, शंभू यादव, भुटाई यादव व अन्य वहां पहुंचे और कहा कि दिलीप यादव की मौत हो गई है। इसके बाद सुचक को उठाकर बैलगाड़ी पर रखा गया और सीताराम, नुनू लाल और भुटाई उसे अस्पताल ले गए जहां उसका इलाज चल रहा है। सुचक ने आगे बताया कि आरोपीगण भीड़ बनाकर उक्त स्थान पर पहुंचे और उसके बेटे की हत्या कर दी। सुचक का फर्दबयान उसे पढ़कर सुनाया गया, जिसे उसने समझ लिया था और सही पाए जाने पर उसने दो गवाहों के समक्ष अपने अंगूठे का निशान लगाया था।

3. सुचक के उक्त फर्दबयान के आधार पर त्रिवेणीगंज थाना कांड संख्या 85/1992 के तहत धारा 147, 148, 149, 323, 324, 326, 307, 302, 120 बी, 447 एवं 114 आई.पी.सी. एवं धारा 27 शस्त्र अधिनियम के तहत अपराध कारित करने के लिए औपचारिक प्राथमिकी दर्ज की गई थी। जांच के बाद उक्त दोनों मामलों के अपीलकर्ताओं के विरुद्ध मामला सत्य पाए जाने पर पुलिस ने 03.12.1992 को धारा 147, 148, 149, 323, 324, 326, 307, 302, 120 बी, 447 एवं 114 आई.पी.सी. के तहत और शस्त्र अधिनियम, 1959 की धारा 27 के तहत आरोप पत्र समर्पित किया। इसके बाद, विद्वत विचारण न्यायालय ने 19.04.1993 के आदेश द्वारा भारतीय दंड संहिता की धारा 147, 148, 149, 323, 324, 326, 307, 302, 120 बी, 447 और 114 तथा शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत अपराधों के लिए संज्ञान लिया था।

इसके बाद विद्वत विचारण न्यायालय ने उक्त दोनों मामलों के अपीलकर्ताओं के खिलाफ 12.08.1996 को भारतीय दंड संहिता की धारा 307, 324, 120 बी, 302, 147, 148 और 323 के तहत आरोप तय किए थे। जहां तक दूसरे मामले के अपीलकर्ता विद्यानंद यादव का सवाल है, उन पर भी भा.द.सं. की धारा 302 और आर्म्स एक्ट की धारा 27 के तहत अलग-अलग आरोप तय किए गए थे।

4. मुकदमे के दौरान अभियोजन पक्ष की ओर से 12 गवाहों की जांच की गई और बचाव पक्ष की ओर से एक गवाह की जांच की गई। अ. सा.-1 राजेश कुमार यादव सुचक का पुत्र है जो प्रत्यक्षदर्शी होने का दावा करता है। अ. सा.-2 नुनू लाल यादव सुचक का भतीजा है, जबकि अ. सा.-3 मूर्ति देवी सुचक की पत्नी है और अ. सा.-4 रवि यादव वर्तमान मामले का सुचक है और मृतक दिलीप कुमार यादव का पिता भी है। अ. सा.-5 अनिरुद्ध पासवान प्रत्यक्षदर्शी है। अ. सा.-6 कुलानंद यादव को पक्षद्रोही घोषित किया गया है। अ. सा.-7 योगेंद्र यादव औपचारिक गवाह है। अ. सा.-8 भागवत प्रसाद यादव को पक्षद्रोही घोषित किया गया है। अ. सा.-9 कला देवी मृतक की पत्नी है, जिसे अफवाहों पर आधारित गवाह बताया गया है। अ.सा.-10 कामेश चंद्र यादव एक औपचारिक गवाह हैं और अ.सा.-11 भूटाई यादव ने अभियोजन पक्ष की ओर से गवाही दी थी, लेकिन वह आगे की प्रतिपरीक्षण के लिए नहीं आया। अ.सा.-12 डॉ. विजय कुमार अग्रवाल ने मृतक के शव का पोस्टमार्टम किया है। डी.डब्लू. 1 वीरेंद्र यादव से बचाव पक्ष की ओर से पूछताछ की गई है, लेकिन वह भी एक औपचारिक गवाह है।

5. दोनों मामलों के अपीलकर्ताओं की ओर से उपस्थित विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता श्री आलोक कुमार ने प्रस्तुत किया है कि जहां तक अभियोजन पक्ष के गवाहों अर्थात अ. सा.-3 मूर्ति देवी, अ. सा.-6 कुलानंद यादव और अ. सा.-8 भागवत प्रसाद यादव का संबंध है, उन्हें पक्षद्रोही घोषित किया गया है और जहां तक अ. सा.-7 योगेंद्र यादव

और अ. सा.-10 कामेश चंद्र यादव का संबंध है, वे औपचारिक गवाह हैं जिन्होंने मूल एफ.आई.आर पर इंस्पेक्टर के हस्ताक्षर और लिखावट और जांच रिपोर्ट पर किए गए हस्ताक्षर की पहचान की है। जहां तक अ. सा.-2 नुनू लाल यादव, अ. सा.-9 कला देवी और अ. सा.-11 भूटाई यादव का संबंध है, यह प्रस्तुत किया गया है कि उक्त गवाह सुनी-सुनाई बातें हैं। इस संबंध में, यह प्रस्तुत किया गया है कि अ. सा.-2 नुनू लाल यादव ने अपने बयान के पैराग्राफ संख्या 1 में कहा है कि वह गोलीबारी की आवाज सुनकर घटनास्थल पर पहुंचे थे, इसलिए स्पष्ट रूप से उन्होंने उस व्यक्ति को नहीं देखा जिसने मृतक दिलीप यादव पर गोली चलाई थी। जहां तक अ.सा.-9 कला देवी का सवाल है, उसने अपने बयान के पैराग्राफ संख्या 3 में कहा है कि उसके जीजा के घर वापस आने के बाद उसने उसे घटना के बारे में बताया था, इसलिए स्पष्ट है कि उसने वास्तविक घटना नहीं देखी थी। अ.सा.-11 भूटाई यादव के संबंध में यह प्रस्तुत किया गया है कि उसने अपने बयान में कहा है कि वह 3 नॉट पिस्तौल की फायरिंग की आवाज सुनने के बाद घटनास्थल पर गया था, इसलिए वह भी प्रत्यक्षदर्शी नहीं हो सकता है और इसके अलावा, वह आगे की प्रतिपरीक्षण के लिए नहीं आया, इसलिए उसका बयान साक्ष्य मूल्य खो देता है। आगे यह प्रस्तुत किया गया है कि अ.सा.-12 वह डॉक्टर है, जिसने मृतक दिलीप यादव के शव का पोस्टमार्टम किया था।

6. अपीलकर्ताओं के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता ने इसके बाद अ. सा.-1 राजेश कुमार यादव, अ. सा.-4 रवि यादव और अ. सा.-5 अनिरुद्ध पासवान के साक्ष्य का हवाला दिया, जिन्हें प्रत्यक्षदर्शी बताया गया है। यह प्रस्तुत किया गया है कि जहां तक अ. सा.-1 का संबंध है, उसने अपने प्रतिपरीक्षण के पैराग्राफ नंबर 10 में कहा है कि जिस समय आरोपी उसके पिता पर हमला कर रहे थे, आरोपी विद्यानंद अपने हाथ में बंदूक पकड़े हुए था और उसने वहां खड़े लोगों को डराने के लिए हवा में गोली चलाई थी और इसे सुनकर वह बेहोश हो गया था। इस प्रकार, यह प्रस्तुत किया गया है कि

जाहिर तौर पर चूंकि अ. सा.-1 बेहोश हो गया था, इसलिए वह अपने भाई की हत्या के संबंध में घटना का गवाह नहीं हो सकता था। अ. सा.-4 के संबंध में, अ. सा.-1 के बयान के पैराग्राफ संख्या 13 की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है, जिसमें कहा गया है कि अ. सा.-1 ने कहा है कि उसके पिता अ. सा.-4, यानी रवि यादव बेहोश हो गए थे और उन्हें 4-5 दिनों के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया था और फिर उन्हें होश आ गया था, जिसके बाद पुलिस ने उनके पिता और मां के बयान दर्ज किए थे। अ. सा.-4 के बयान के पैराग्राफ संख्या 6 का हवाला देते हुए यह भी कहा गया है कि हमला किए जाने के तुरंत बाद वह गिर गए थे और बेहोश हो गए थे और अस्पताल में उन्हें होश आया था। अ. सा.-4 के बयान के पैराग्राफ संख्या 8 की ओर भी ध्यान आकर्षित किया गया है, जिसमें उन्होंने कहा है कि उनका बयान दो दिनों के बाद पुलिस स्टेशन में दर्ज किया गया था। इस प्रकार, यह कहा गया है कि हालांकि अ. सा.-4 3-4 दिनों तक अस्पताल में रहा था, लेकिन इसके विपरीत उसने कहा है कि वह पुलिस स्टेशन गया था जहां उसका बयान 2 दिनों के बाद दर्ज किया गया था, इस प्रकार यह गवाह विश्वसनीय नहीं है।

7. अपीलकर्ताओं के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता ने तर्क दिया है कि जहां तक अ. सा.-5 का प्रश्न है, उसने अपने बयान के पैराग्राफ संख्या 10 में कहा है कि घटना के दिन को वह अपने खेत में सिंचाई कर रहा था तथा दोपहर लगभग 12 बजे उसने गोली चलने की आवाज सुनी, जिसके बाद वह घटनास्थल की ओर चला गया, जबकि इसके विपरीत सुचक के फर्दबयान तथा अन्य गवाहों के बयान से स्पष्ट है कि गोली चलने की घटना प्रातः 8:00-9:00 बजे के मध्य हुई थी, अतः उक्त गवाह प्रत्यक्षदर्शी नहीं है, तथा इसके अतिरिक्त वह विश्वसनीय भी नहीं है, क्योंकि उसकी गवाही में बहुत सी विसंगतियां हैं।

8. अपीलकर्ताओं की ओर से उपस्थित विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता ने आगे कहा कि अ. सा.-1, अ. सा.-4 और अ. सा.-5 के साक्ष्यों में पूर्णतः असंगति है, इसलिए अपीलकर्ताओं की दोषसिद्धि को बरकरार रखने के लिए उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। यह तर्क दिया गया है कि जांच अधिकारी से पूछताछ नहीं की गई है, जिससे अपीलकर्ताओं को बहुत अधिक नुकसान हुआ है। इस संबंध में, इस न्यायालय की विद्वान खंडपीठ द्वारा ***आपराधिक अपील (खं.पी.) संख्या 592/2005 (तुलसी ढाढ़ी उर्फ धारी एवं अन्य बनाम बिहार राज्य एवं अन्य*** एवं अन्य समान मामले) में पारित दिनांक 21.10.2011 के निर्णय का संदर्भ दिया गया है, जिसमें यह माना गया है कि जांच अधिकारी की जांच न करना अभियोजन पक्ष के मामले में एक गंभीर कमी है, जिसके परिणामस्वरूप अभियुक्त को नुकसान होता है। इस संबंध में, नीचे पैराग्राफ संख्या 44 को पुनः प्रस्तुत करना प्रासंगिक होगा:

> *"44. बेशक, जांच अधिकारी से पूछताछ नहीं की गई है। यह स्थापित कानून है कि जांच अधिकारी से पूछताछ न करने से अभियोजन पक्ष के बयान को कलंकित नहीं किया जा सकता। यह इंगित करने की आवश्यकता नहीं है कि जांच अधिकारी के समक्ष गवाहों के बयान में विरोधाभासों को रिकॉर्ड पर लाने का अधिकार अभियुक्त का बहुत मूल्यवान अधिकार है और यह दर्शाकर कि गवाह ने सुधार किया है या उसने ऐसे साक्ष्य दिए हैं जो उसके पहले के बयान का खंडन करते हैं, अभियुक्त अदालत को यह संतुष्ट करने में सक्षम है कि गवाह एक विश्वसनीय गवाह नहीं है। जांच अधिकारी से पूछताछ न करना अभियोजन पक्ष के मामले में गंभीर कमी है जिसके परिणामस्वरूप अभियुक्त के प्रति पूर्वाग्रह पैदा होता है। यह स्पष्ट है कि गवाहों के साक्ष्य में विरोधाभासों को रिकॉर्ड पर लाने के लिए जांच अधिकारी से पूछताछ आवश्यक है, इसलिए यह अभियुक्त का मूल्यवान अधिकार है। इसके*

अलावा यह स्पष्ट है कि जांच अधिकारी से पूछताछ न करना अभियोजन पक्ष के मामले में गंभीर कमी है, इस प्रकार, यह अभियुक्त को न्यायालय के समक्ष यह दिखाने के अवसर से वंचित करता है कि गवाह विश्वसनीय गवाह नहीं थे, क्योंकि इससे पहले के बयान में विरोधाभास साबित होता है। वर्तमान मामले में, जांच अधिकारी की गैर-परीक्षा ने निश्चित रूप से अभियुक्त को प्रभावित किया है, क्योंकि घटना का स्थान साबित नहीं हुआ है और न ही चश्मदीदों का यह दावा कि उन्होंने कमरे की खिड़की के छेद या दरार से घटना देखी थी, जांच अधिकारी की गैर-परीक्षा के कारण साबित हुआ है। इस प्रकार, हमारी राय में, वर्तमान मामले में जांच अधिकारी की गैर-परीक्षा एक गंभीर दुर्बलता है, जिसके परिणामस्वरूप अभियुक्त को पूर्वाग्रह हुआ है। इसलिए, इस आधार पर भी अभियुक्तों की दोषसिद्धि को बरकरार नहीं रखा जा सकता है।"

9. अपीलकर्ताओं के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता ने आगे तर्क दिया कि अपने फर्दबयान में अ. सा.-4 अर्थात् सुचक रवि यादव ने कहा है कि अपीलकर्ता विद्यानंद यादव ने अपनी जेब से पिस्तौल निकालकर मृतक दिलीप यादव पर गोली चलाई थी, तथापि अ. सा.-4 ने अपने बयान में कहा है कि वह यह नहीं बता सकता कि पिस्तौल एक बैरल की थी या दो बैरल की। इस प्रकार, यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि सुचक के साक्ष्य में हथियार की प्रकृति के संबंध में पूर्णतः असंगति है। यह कहा गया है कि घटनास्थल से न तो खून बरामद किया गया है और न ही घायल व्यक्ति द्वारा पुलिस को सौंपे गए कपड़ों की फोरेंसिक विभाग द्वारा जांच की गई है, तथा न ही उन्हें विचारण के दौरान निचली अदालत के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। यह भी कहा गया है कि मृतक के शरीर से निकाली गई गोली, जिसे सीलबंद वॉयल में कांस्टेबल को सौंपा गया था, को भी न तो प्रदर्शित किया गया है और न ही फोरेंसिक विशेषज्ञों द्वारा उसकी जांच की गई है। इस प्रकार, इस्तेमाल किए गए हथियार की प्रकृति इस तथ्य

के अलावा स्थापित नहीं की गई है कि हथियार भी बरामद नहीं किया गया है, जिससे अपीलकर्ताओं को भी गंभीर नुकसान हुआ है। इस संबंध में, अपीलकर्ताओं के विद्वान वरिष्ठ वकील ने ***मुन्ना लाल बनाम उत्तर प्रदेश राज्य*** के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय का हवाला दिया है, जिसकी रिपोर्ट ***(2023) 3 एससीआर 224*** में दी गई है, जिसके पैराग्राफ संख्या 38 और 39 नीचे पुनः प्रस्तुत किए गए हैं।

> *"38. सबसे पहले, धारा 161, दं. प्र. सं. के तहत अ. सा.-3 का बयान घटना के लगभग 24 दिन बाद दर्ज किया गया था। चूंकि जांच अधिकारी गवाह बॉक्स में नहीं गया था, इसलिए अपीलकर्ताओं को उससे प्रतिपरीक्षण करने और इस तरह देरी का कारण जानने का अवसर नहीं मिला। नतीजतन, जांच के दौरान अ. सा.-3 के बयान दर्ज करने में हुई देरी का उल्लेख नहीं किया गया है और इसलिए यह अनुचित है। जांच की प्रक्रिया के दौरान बाद में अ. सा.-3 को चश्मदीद गवाह के रूप में स्थापित किए जाने की संभावना को पूरी तरह से इनकार नहीं किया जा सकता है।*
>
> *39. दूसरे, हालांकि अ.सा.-4 के बारे में कहा जाता है कि वह 5 सितंबर, 1985 को दोपहर 1.30 बजे घटनास्थल पर पहुंचा था और उसने शव के कूल्हे पर लगी जख़्म से बहते खून में एक गोली बरामद की थी, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि उस हथियार को जब्त करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया जिससे जानलेवा हमला किया गया था। यह सच है कि हथियार जब्त करने में विफलता/उपेक्षा अभियोजन पक्ष के मामले को खारिज करने का एकमात्र कारण नहीं हो सकता है, लेकिन तथाकथित चश्मदीद गवाहों यानी अ.सा.-2 और अ.सा.-3 की मौखिक गवाही के आधार पर यह मामला महत्वपूर्ण हो जाता है, जिसे इस न्यायालय ने पूरी तरह से*

विश्वसनीय नहीं पाया। जांच अधिकारी द्वारा गायब कड़ियाँ प्रदान की जा सकती थीं, जिन्होंने फिर से गवाह बॉक्स में प्रवेश नहीं किया। गवाह की जांच न करने से बचाव पक्ष को नुकसान पहुंचा है या नहीं, यह अनिवार्य रूप से तथ्य का प्रश्न है और प्रत्येक मामले में मौजूद तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए निष्कर्ष निकालना आवश्यक है। जांच अधिकारी गवाह के रूप में गवाही क्यों नहीं दे सका, जैसा कि अ. सा.-4 ने बताया, वह यह है कि उसे प्रशिक्षण के लिए भेजा गया था। यह नहीं दिखाया गया कि जांच अधिकारी किसी भी परिस्थिति में विचारण न्यायालय में अपनी गवाही दर्ज करने के लिए कोर्स नहीं छोड़ सकता था। यह ध्यान देने योग्य है कि न तो विचारण न्यायालय और न ही उच्च न्यायालय ने जांच अधिकारी की जांच न करने के मुद्दे पर विचार किया। वर्तमान मामले के तथ्यों में, विशेष रूप से अभियोजन पक्ष के मामले में स्पष्ट अंतराल और अ. सा.-2 और अ. सा.-3 के साक्ष्य पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं होने के कारण, यह न्यायालय वर्तमान मामले को एक ऐसा मामला मानता है जहां जांच अधिकारी की परीक्षा महत्वपूर्ण थी क्योंकि वह अपेक्षित साक्ष्य पेश कर सकता था। उनकी गैर-जांच अभियोजन पक्ष के अपीलकर्ताओं को फंसाने के प्रयास में एक महत्वपूर्ण कमी पैदा करती है, जिससे अभियोजन पक्ष के मामले में उचित संदेह पैदा होता है।"

10. अपीलार्थियों के विद्वान वरिष्ठ वकील द्वारा यह तर्क दिया जाता है कि घटना का स्थान स्थापित किया जाना बाकी है क्योंकि पी. डब्ल्यू. 1 को छोड़कर न तो अभियोजन पक्ष के गवाहों ने मामले के उक्त पहलू पर विचार किया है, फिर भी इसे जांच अधिकारी द्वारा साबित करने की आवश्यकता थी, हालांकि उन्हें अभियोजन पक्ष द्वारा पेश नहीं किया गया है। इस संबंध में अपीलकर्ताओं के वरिष्ठ अधिवक्ता ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ***रविश्वर मांझी एवं अन्य बनाम झारखंड राज्य*** के

मामले में दिए गए निर्णय का हवाला दिया है, जिसकी रिपोर्ट ***(2008) 16 एससीसी 561, पैराग्राफ संख्या 27*** में दी गई है, जिसका पुनरुत्पादन नीचे दिया गया है:

> *"27. इस तरह के मामले में जांच अधिकारी से पूछताछ की जानी चाहिए थी। अभियोजन पक्ष द्वारा उसकी जांच यह दिखाने के लिए आवश्यक थी कि निष्पक्ष जांच हुई है। दुर्भाग्य से, यहां तक कि कोई साइट प्लान भी तैयार नहीं किया गया था। रिकॉर्ड में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे पता चले कि घटना किस जगह पर हुई थी। यह कहा गया है कि पक्षों के घर एक सड़क से विभाजित हैं। यदि ऐसा है, तो हमलावर कौन था, यह पता लगाने के लिए घटना के सटीक स्थान को इंगित करना और भी अधिक आवश्यक था।"*

11. इसके बाद अपीलार्थियों के विद्वान वरिष्ठ वकील द्वारा यह तर्क दिया जाता है कि घायल व्यक्तियों के संबंध में न तो कोई जख़्म की रिपोर्ट पेश की गई है और न ही अ. सा.-3 और अ. सा.-4 की जख़्म साबित हुई हैं और इसके अलावा, यह सुझाव देने के लिए रिकॉर्ड पर कुछ भी नहीं है कि उन्होंने अस्पताल में उपचार प्राप्त किया था, इसलिए यह प्रस्तुत किया जाता है कि अ. सा.-3 और अ. सा.-4 की जख्मों की जांच के अभाव में और मुकदमे के दौरान किसी भी जख़्म की रिपोर्ट को रिकॉर्ड पर नहीं लाया गया है, भा.द.सं. की धारा 307 के तहत कोई मामला नहीं बनाया गया है। यह भी तर्क दिया जाता है कि फरदबायन को न तो प्रदर्शित किया गया है और न ही साबित किया गया है। इसी तरह, जांच रिपोर्ट को भी रिकॉर्ड में नहीं लाया गया है, जिससे अपीलार्थियों के लिए भी बहुत पूर्वाग्रह पैदा हुआ है। यह कहा गया है कि अ. सा.-1 ने अपने प्रतिपरीक्षण के पैरा संख्या 2 में यह कहा है कि विद्यानंद यादव ने मृतक पर बहुत नजदीक से गोली चलाई थी तथा इसी प्रकार अ. सा.-4 ने भी अपने बयान में कहा है कि मृतक के सीने के पास पिस्तौल लाकर उससे गोली चलाई गई

थी, हालांकि अ. सा.-12 डॉ. विजय कुमार अग्रवाल के साक्ष्य से पता चलता है कि जलने या जलने का कोई निशान नहीं है, गन पाउडर नहीं मिला है और केवल छाती की दीवार के दाहिने तरफ 1 ½"x ¾" x थोरिसिक गुहा गहरा घाव पाया गया है और डॉक्टर ने अपनी प्रतिपरीक्षण में कहा है कि ऐसा प्रतीत होता है कि मृतक को 6 फीट से अधिक दूरी से गोली मारी गई थी, इस प्रकार अभियोजन पक्ष की पूरी कहानी झूठी और मनगढ़ंत लगती है। अंत में, अपीलार्थियों के विद्वान वरिष्ठ वकील ने प्रस्तुत किया है कि आई. पी. सी. की धारा 120 बी को वर्तमान मामले में इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए आकर्षित नहीं किया जाएगा कि साजिश रचने के लिए पूर्व विचार बैठक आवश्यक है, जो वर्तमान मामले में साबित नहीं हुई है। इस संबंध में, अपीलकर्ताओं के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता ने ***परवीन उर्फ सोनू बनाम हरियाणा राज्य*** के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय का हवाला दिया है, जो ***2021 एससीसी ऑनलाइन एससी 1184,*** पैराग्राफ संख्या 12 में रिपोर्ट किया गया है, जिसका पुन: उल्लेख नीचे किया गया है:

> *"12. यह काफी अच्छी तरह से तय किया गया है, साजिश के आरोप को साबित करने के लिए, धारा 120-बी के दायरे में, यह स्थापित करना आवश्यक है कि एक गैरकानूनी कार्य करने के लिए पक्षों के बीच एक समझौता था। साथ ही, यह भी ध्यान देने योग्य है कि प्रत्यक्ष साक्ष्य द्वारा षडयंत्र स्थापित करना कठिन है, लेकिन साथ ही, किसी गैरक़ानूनी कार्य के इच्छित उद्देश्य के लिए षडयंत्रकारियों के बीच विचारों की समानता को दर्शाने वाले किसी भी साक्ष्य के अभाव में, किसी व्यक्ति को भा.द.सं. की धारा 120-बी के तहत अपराधों के लिए दोषी ठहराना सुरक्षित नहीं है। यहाँ कुछ अंश और वहाँ कुछ अंश जिन पर अभियोजन पक्ष निर्भर करता है, अभियुक्त को आपराधिक साजिश के अपराध से जोड़ने के लिए पर्याप्त नहीं माना जा सकता है। यहां तक कि अन्य स्वीकार्य पुष्टिकारक साक्ष्यों के*

अभाव में सह-अभियुक्त के कथित स्वीकारोक्ति बयान भी अभियुक्त को दोषी ठहराने के लिए सुरक्षित नहीं हैं। इंद्र दलाल बनाम हरियाणा राज्य के मामले में, इस न्यायालय ने केवल स्वीकारोक्ति बयान और अपराध में उपयोग किए गए वाहन की बरामदगी के आधार पर दोषसिद्धि पर विचार किया है। उक्त मामले में, दोषसिद्धि को को रद्द करते हुए, इस न्यायालय ने पैराग्राफ 16 और 17 में निम्नानुसार अभिनिर्धारित किया है:

> *"16. उपरोक्त प्रावधान के पीछे का दर्शन एक कठोर वास्तविकता की स्वीकृति है कि पुलिस अधिकारियों द्वारा उत्पीड़न और यातना या यहां तक कि प्रलोभन का अभ्यास करके स्वीकारोक्ति की वसूली की जाती है और इसलिए, वे किसी भी विश्वास के योग्य नहीं हैं। यह प्रावधान अभियुक्त के खिलाफ सबूत से उसके द्वारा एक पुलिस अधिकारी के सामने किए गए कबूलनामे को पूरी तरह से बाहर करता है। यह प्रावधान उन स्वीकारोक्ति बयानों पर भी लागू होता है जो एक पुलिस अधिकारी के लिए किए जाते हैं जो अन्यथा इस तरह से कार्य नहीं कर सकते हैं। यदि वह एक पुलिस अधिकारी है और उसकी उपस्थिति में स्वीकारोक्ति दी गई थी, तो जो भी क्षमता हो, वह सबूत में अस्वीकार्य हो जाता है। इस प्रावधान के तहत स्थापित और इस सख्त नियम को इस न्यायालय के साथ-साथ उच्च न्यायालयों द्वारा अनगिनत रूप से दोहराया गया है।*
>
> *17. "स्वीकारोक्ति" शब्द को कहीं भी परिभाषित नहीं किया गया है। हालाँकि, अदालतों ने शब्दकोश के अर्थ का सहारा लिया है और समझाया है कि आरोपी द्वारा पुपुलिस के समक्ष अभियुक्त द्वारा दिए गए ऐसे बयान, जो अपराध के होने का संकेत देते हैं, स्वीकारोक्ति के बराबर होंगे और इसलिए, इस प्रावधान के तहत अस्वीकार्य होंगे। इसे अपराध की प्रत्यक्ष स्वीकृति के रूप में भी परिभाषित किया गया है न कि किसी भी दोषपूर्ण तथ्य की स्वीकृति, चाहे वह कितना भी गंभीर या निर्णायक क्यों न हो। साक्ष्य अधिनियम की धारा 26 उन सभी स्वीकारोक्ति बयानों को*

अस्वीकार्य बनाती है जब वे किसी भी व्यक्ति द्वारा किए जाते हैं, जब वह एक पुलिस अधिकारी की हिरासत में होता है, जब तक कि ऐसा स्वीकारोक्ति बयान मजिस्ट्रेट की तत्काल उपस्थिति में नहीं किया जाता है। इसलिए, जब कोई व्यक्ति पुलिस हिरासत में होता है, तो उसके द्वारा किसी तीसरे व्यक्ति, यानी पुलिस अधिकारी के अलावा किसी अन्य व्यक्ति के सामने किया गया स्वीकारोक्ति बयान भी अस्वीकार्य हो जाएगा।"

12. इसके विपरीत, राज्य के विद्वान सा.लो.अ., श्री दिलीप कुमार सिन्हा ने प्रस्तुत किया है कि अ. सा.-1, अ. सा.-3, अ. सा.-4 और अ. सा.-5 महत्वपूर्ण गवाह हैं और साथ ही प्रत्यक्षदर्शी भी हैं और उन्होंने अभियोजन पक्ष के मामले का पूरा समर्थन किया है। यह भी प्रस्तुत किया जाता है कि नेत्र संबंधी साक्ष्य चिकित्सा साक्ष्य द्वारा पूरी तरह से पुष्ट है। यह तर्क दिया गया है कि सभी महत्वपूर्ण गवाहों ने अभियोजन पक्ष के मामले का समर्थन किया है, उनकी गवाही सुसंगत है और कोई विरोधाभास मौजूद नहीं है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि साक्ष्य में मामूली चूक या भिन्नता या दुर्बलता को कभी भी घातक नहीं माना जाता है और यह पूरी तरह से साक्ष्य की अस्वीकृति के लिए आधार नहीं हो सकता है। इस संबंध में, माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ***उत्तर प्रदेश राज्य बनाम कृष्ण मास्टर एवं अन्य*** के मामले में दिए गए निर्णय का संदर्भ दिया गया है, जो ***एआईआर 2010 एससी 3071*** में रिपोर्ट किया गया है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा म***ध्य प्रदेश राज्य बनाम दल सिंह एवं अन्य*** के मामले में दिए गए निर्णय का भी संदर्भ दिया गया है, जो ***2013 (14) एससीसी 159*** में रिपोर्ट किया गया है और यह प्रस्तुत किया गया है कि प्रत्येक आपराधिक मामले में विसंगति, अलंकरण और जोर होना स्वाभाविक है, इसलिए न्यायालय को गवाह की विश्वसनीयता के बारे में अपनी राय बनानी चाहिए और इस संबंध में निष्कर्ष दर्ज करना चाहिए कि क्या उसका बयान विश्वास पैदा करता है। इस

संबंध में, इसके पैराग्राफ संख्या 13 को पुनः प्रस्तुत करना प्रासंगिक होगा, जिसे नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:.

> *"13. जहां तक विसंगतियों, अलंकरणों और सुधारों का सवाल है, हर आपराधिक मामले में ऐसा होना तय है, जिसका कारण है गवाहों के अवलोकन में सामान्य त्रुटियों, जैसे समय बीतने के कारण स्मृति की त्रुटियां, या मानसिक प्रवृत्ति के कारण त्रुटियां, जैसे कि घटना के समय सदमे या भय की भावनाएं। अदालत को एक गवाह की विश्वसनीयता के बारे में अपनी राय बनानी चाहिए, और इस संबंध में एक निष्कर्ष दर्ज करना चाहिए कि क्या उसकी गवाही विश्वास को प्रेरित करती है। "अतिशयोक्ति स्वयं साक्ष्य को भंगुर नहीं बनाती है। लेकिन यह उन कारकों में से एक हो सकता है जिसके खिलाफ अभियोजन पक्ष की कहानी की विश्वसनीयता का परीक्षण किया जा सकता है, जब पूरे साक्ष्य को विश्वसनीयता की कसौटी पर परखने के लिए एक क्रूसिबल में रखा जाता है।" इसलिए, एक गवाह के बयानों में केवल मामूली भिन्नताओं को सुधार के रूप में नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि यह पहले के चरण में गवाह द्वारा दिए गए बयान का विस्तार हो सकता है। "अप्रासंगिक विवरण जो किसी भी तरह से गवाह की विश्वसनीयता को खराब नहीं करते हैं, उन्हें चूक या विरोधाभास के रूप में लेबल नहीं किया जा सकता है।" वे चूक जो भौतिक विवरणों में विरोधाभास के बराबर हैं, यानी जो मुकदमे को भौतिक रूप से प्रभावित करते हैं, या अभियोजन पक्ष के मामले के मूल को प्रभावित करते हैं, गवाह की गवाही को बदनाम करने के लिए उत्तरदायी बनाते हैं। जहां ऐसी चूक विरोधाभास को जन्म देती है, गवाह की सत्यता पर गंभीर संदेह पैदा करती है, और अन्य गवाह भी अपने साक्ष्य को स्वीकार्य बनाने के लिए अदालत के समक्ष महत्वपूर्ण सुधार करते हैं, वहां यह नहीं कहा जा सकता कि ऐसे साक्ष्य पर भरोसा*

करना सुरक्षित है। (देखें ए. शंकर बनाम कर्नाटक राज्य [(2011) 6 एससीसी 279])"

13. राज्य के लिए विद्वान सा.लो.अ. ने आगे तर्क दिया है कि यह एक अच्छी तरह से स्थापित कानून है कि अभियोजन पक्ष के गवाह के साक्ष्य को पूरी तरह से खारिज नहीं किया जा सकता है, केवल इसलिए कि अभियोजन पक्ष ने उसे शत्रुतापूर्ण मानने का विकल्प चुना था और उससे प्रतिपरीक्षण की थी, हालांकि इसे इस हद तक स्वीकार किया जा सकता है कि उनका संस्करण उसकी सावधानीपूर्वक जांच पर निर्भर है। इस संबंध में, ***सेल्वामणि बनाम राज्य पुलिस निरीक्षक द्वारा प्रतिनिधि, 2024 में एस. सी. सी. 837*** ऑनलाइन रिपोर्ट किया गया के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय का भी संदर्भ दिया गया है। राज्य के लिए विद्वत सा.लो.अ. ने आगे प्रस्तुत किया है कि चूंकि घटना का स्थान आक्षेपित नहीं है और इसके अलावा, अभियोजन पक्ष के गवाहों द्वारा प्रकट की गई घटना के स्थान की सत्यता के बारे में कोई सुझाव नहीं दिया गया था, इसलिए जांच अधिकारी से पूछताछ न करने से अपीलकर्ताओं पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह भी प्रस्तुत किया जाता है कि गवाहों द्वारा अपने साक्ष्य में घटना के तरीके का वर्णन किया गया है और उक्त प्रभाव में कोई विसंगति नहीं है। इस प्रकार, यह प्रस्तुत किया जाता है कि अभिलेखों से यह पता चलेगा कि अपीलार्थियों को कथित अपराध से जोड़ने के लिए अभिलेख पर पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है, इसलिए उनकी दोषसिद्धि और सजा को बरकरार रखा जाना चाहिए। इसके बाद यह दलील दी गई कि विद्वान विचारण न्यायाधीश ने रिकॉर्ड पर मौजूद सामग्री पर विचार करके आक्षेपित फैसला और दोषसिद्धि तथा सजा का आदेश पारित किया है और यह एक तर्कपूर्ण आदेश है, इसलिए दोनों अपीलें खारिज किए जाने योग्य हैं।

14. पक्षों के विद्वान वकील को सुनने के अलावा, हमने मौखिक और दस्तावेजी दोनों साक्ष्यों का बारीकी से अध्ययन किया है। आगे बढ़ने से पहले, साक्ष्य पर संक्षिप्त रूप से चर्चा करना आवश्यक है।

15. पी. डब्ल्यू. 1 राजेश कुमार यादव सूचना देने वाले का बेटा और मृतक का भाई है, जो चश्मदीद गवाह होने का दावा करता है और उसने अपने बयान में कहा है कि यह घटना साढ़े चार साल पहले की है, जब उसका भाई दिलीप यादव सुबह लगभग आठ बजे खेत में जुताई करने के लिए मचाधार गया था और उस समय नतई यादव भीड़ के साथ वहां पहुंचा था और जब उसके पिता को पता चला कि नतई यादव भीड़ के साथ घटना स्थल पर आया था, तो वह और उसके पिता भी वहां गए और देखा कि नतई यादव, विद्यानंद यादव। इस मौके पर योगेंद्र यादव, महेंद्र यादव, लक्ष्मी यादव, भागवत यादव, भूपेंद्र यादव, राजेंद्र यादव, विनोद यादव, राजन यादव, मनोज यादव, सरोज यादव और जितेंद्र कुमार अरविंद मौजूद थे। अ. सा.-1 ने डर के मारे झाड़ियों में छिपकर घटना को देखना शुरू कर दिया था और इसी बीच उसके पिता ने उसके भाई दिलीप यादव को भाग जाने को कहा था। इसके बाद, उनके भाई दिलीप *हल* (हल) के साथ अपने घर लौटने लगे और इस बीच नटाई यादव ने उन्हें मारने का आह्वान किया, जिसके बाद विद्यानंद यादव अपनी पीठ से पिस्तौल निकालकर दिलीप यादव के पास चले गए, जिसके बाद उन्होंने अपनी छाती पर गोली चला दी जिससे दिलीप घायल हो गए और फिर वह नीचे गिर गए। भूपेंद्र यादव ने तब अ. सा.-1 के पिता पर *भाला* से हमला किया था जो उनकी दाहिनी पसलियों पर लगा था। योगेंद्र यादव ने अ. सा.-1 के पिता के सिर पर भी हमला किया था जो उनके माथे पर लगा था। इसके बाद, भूपेंद्र यादव और लक्ष्मी यादव ने अ. सा.-1 की मां पर *फरसा* से हमला किया था, जो उसकी मां की दाहिने हाथ की उंगली में लग गया था, जिससे उन्हें जख़्म लगी थी और फिर आरोपी लोग भाग गए थे। इसके बाद अ. सा.-1 ने कहा कि उसके बाद वह झाड़ियों से

बाहर आया और अपने भाई के पास गया और देखा कि उसकी मौत हो गई है। इसके बाद शंभू यादव और नूनू लाल यादव ने उसके पिता को उठाया और उन्हें एक वाहन में बिठाकर ले गए। अ. सा.-1 ने कठघरे में खड़े अभियुक्त व्यक्तियों की पहचान कर ली है।

16. प्रतिपरीक्षण में, अ. सा.-1 ने कहा है कि उक्त घटना से पहले, उसने न तो अपने पिता को उस खेत में जुताई करते देखा था जहां हत्या हुई थी और न ही उसने अपने मृत भाई दिलीप यादव को उक्त खेत में जुताई करते देखा था। अ.सा.-1 ने आगे बताया कि वह खेत के पूर्व-दक्षिणी कोने की ओर स्थित झाड़ियों में छिपा हुआ था और वहीं से वह उन आरोपियों पर नजर रख रहा था जो उस पर नजर रख रहे थे। अ. सा.-1 ने यह भी कहा है कि उसकी माँ उस खेत से सटे मैदान के पश्चिमी-दक्षिणी कोने में मौजूद थी जिसमें यह घटना हो रही थी और वही रघुनी यादव की है। उसने यह भी कहा है कि उसके पिता अपनी माँ के साथ रघुनी यादव के खेत में खड़े थे और वे उसके भाई को वापस लौटने के लिए कह रहे थे और उस समय आरोपी व्यक्तियों ने उसके पिता को पकड़ लिया था, जिसके बाद उन्होंने उसके पिता पर हमला करना शुरू कर दिया था और जब उसकी माँ ने उसके पिता को बचाने की कोशिश की, तो आरोपी व्यक्तियों ने उसके साथ भी हमला करना शुरू कर दिया। अ. सा.-1 ने आगे कहा कि जिस समय आरोपी व्यक्ति अपने पिता पर हमला कर रहे थे, उस समय अपीलार्थी विद्यानंद यादव रघुनी यादव के खेत में आया था और अपने हाथ में बंदूक लिए हुए था, जिसके बाद उसने वहां मौजूद लोगों को डराने के लिए गोली चलाई थी और बंदूक का शोर सुनकर वह बेहोश हो गया था। उसने अपनी प्रतिपरीक्षण में यह भी कहा है कि पुलिस ने उसका बयान दर्ज किया था। अ. सा.-1 ने यह भी कहा है कि उसके पिता के शरीर पर *भाला* फेंका गया था जो धंस गया था और फिर अन्य आरोपियों ने उसके पिता के सिर पर *लाठी* से हमला किया था, जिसके बाद वह जमीन पर गिर गए थे, खून भी जमीन पर गिर रहा था और उसके पिता बेहोश हो गए थे, जिसके बाद उन्हें

एक अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां वह 4-5 दिनों तक रहे और होश में आने के बाद उनका बयान और उनकी मां का बयान पुलिस द्वारा दर्ज किया गया था। उन्होंने यह भी कहा है कि उनकी साली का बयान दर्ज नहीं किया गया था।

17. अ. सा.-2 नुनूलाल यादव को सुचक का भतीजा बताया गया है और उसने अपने बयान में कहा है कि यह घटना लगभग 4 साल पुरानी है, जो उस सुबह हुई थी जब वह अपने खेत की जुताई कर रहा था और जब उसने गोली चलने की आवाज सुनी तो वह घटना स्थल पर गया था और नाहर (नहर) से उसने दिलीप यादव, रवि यादव और उसकी बड़ी माँ को नीचे गिरते देखा था। उन्होंने यह भी देखा था कि दिलीप की छाती में गोली लगी हुई थी और उनकी मौत हो गई थी और उनकी छाती से खून भी बह रहा था। उन्होंने रवि (अ. सा.-4) की पसलियों पर *भाला* से लगी जख़्म को भी देखा था, जिसके बाद उन्होंने अपना तौलिया फाड़ दिया था और रवि के घाव को बांध दिया था। अ. सा.-2 ने यह भी कहा है कि रवि के माथे और उसकी बड़ी माँ के दाहिने हाथ पर जख़्म थी और फिर रवि को बैलगाड़ी पर अस्पताल ले जाया गया। अ. सा.-2 ने कठघरे में खड़े अभियुक्त व्यक्तियों की पहचान कर ली है। प्रतिपरीक्षण में अ.सा.-2 ने कहा है कि वह गोली चलने की आवाज सुनने के बाद घटनास्थल पर गया था और उसे वहां पहुंचने में आधा घंटा लग गया था, हालांकि जब वह वहां पहुंचा तो कोई भी आरोपी मौजूद नहीं था और उसकी बड़ी मां बेहोश हो गई थी।

18. अ. सा.-3 मूर्ति देवी सुचक की पत्नी और मृतक की माँ हैं, जिन्होंने अपने मुख्य परीक्षा में कहा है कि यह घटना साढ़े चार साल पहले सुबह लगभग आठ बजे हुई थी जब उनका बेटा दिलीप मछाहार में खेत में जुताई करने गया था और उसका पति भी पीछे से गया था। इसके बाद, उसे पता चला कि उसके बेटे को गोली लगी है और फिर वह भी वहाँ गई थी जहाँ उसने देखा कि दिलीप और उसके पति पर हमला किया गया था। अ. सा.-3 ने आगे कहा है कि भागवत, भूपेंद्र और योगेंद्र ने उनके पति

की पीठ और छाती पर भी हमला किया था, जिसके परिणामस्वरूप उनके पति जमीन पर गिर गए थे। इसके बाद उसने कहा कि उसने अपने बेटे को गोली लगते नहीं देखा था, हालाँकि उसने उन अभियुक्त व्यक्तियों को देखा था जिन्होंने उसके पति पर हमला किया था। अ. सा.-3 ने यह भी कहा है कि भूपेंद्र और लक्ष्मी ने भी उस पर *लाठी* से हमला किया था और पूरी घटना को ग्रामीणों ने देखा था, इसके अलावा उसने और उसके छोटे बेटे ने उक्त घटना को देखा था और जब वे जमीन पर गिर गए थे, तो आरोपी व्यक्ति ग्रामीणों के वहां पहुंचने के बाद भाग गए थे। यद्यपि उक्त गवाह को लोक अभियोजक द्वारा पक्षद्रोही घोषित किया गया है, लेकिन उसे इस गवाह से प्रतिपरीक्षण करने की अनुमति दी गई थी और अपनी प्रतिपरीक्षण में उसने कहा है कि उसने पुलिस के समक्ष खुलासा किया था कि जिस समय वह और उसका पति घटनास्थल पर गए थे, आरोपी व्यक्ति उसके बेटे दिलीप पर हमला कर रहे थे। उसने यह भी कहा है कि विद्यानंद यादव ने उसकी कमर से पिस्तौल निकाली थी और उसके बेटे की छाती पर गोली चलाई थी, जिसके बाद वह नीचे गिर गया था। इसके बाद उसने कहा कि उसे याद नहीं है कि क्या उसने पुलिस के सामने उपरोक्त तथ्यों का खुलासा किया था और क्या उसने पुलिस को बताया था कि नतई यादव आरोपी व्यक्तियों को पिता और बेटे को मारने के लिए कह रहा था। अ. सा.-3 ने कठघरे में खड़े अभियुक्त व्यक्तियों की पहचान कर ली है। अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा अपनी प्रतिपरीक्षण में, अ. सा.-3 ने कहा है कि कोई भी अपने बेटे के साथ नहीं गया था और सूर्योदय के समय उसने खाना खाया था और अपने खेत के लिए चला गया था और फिर उसका पति दिलीप के जाने के कुछ मिनट बाद चला गया था, जिसके बाद राजेश भी पीछे से चला गया था। इसके बाद, अ. सा.-3 को किसी से पता चला कि उसके बेटे को गोली मार दी गई है और जब उसने *हल्ला* (अलार्म) सुना, तो वह घटना स्थल पर गई थी। उसने यह भी कहा है कि उसने सुना था कि उसके पति और बेटे की हत्या कर दी गई है। उसने यह भी

कहा है कि शोर सुनकर उसका बेटा राजेश और 20-25 लोग घटनास्थल पर पहुंचे और जब वह खेत में पहुंची, जहां घटना हुई थी, तो उसने देखा कि उसका बेटा दिलीप और पति नीचे गिरे हुए थे।

19. अ. सा.-4 रवि यादव मृतक के पिता और वर्तमान मामले के सुचक हैं, जिन्होंने अपने बयान में कहा है कि लगभग साढ़े चार साल पहले सुबह लगभग आठ से नौ बजे वे और उनके बेटे दिलीप खेत की जुताई के लिए मचाहाधार गए थे, जिसे उनके द्वारा गोपाल मारवाड़ी से 1,000 रुपये की राशि में खरीदा गया था, हालांकि इसे पहले नतई यादव द्वारा अनुबंध के आधार पर जुताई जा रही थी। नटाई यादव सुचक और उसके परिवार के सदस्यों को खेत की जुताई करने से रोक रहा था, इसलिए पंचायती आयोजित की गई और यह निर्णय लिया गया कि वे नटाई यादव को 5,000/- रुपये की राशि दें, जिसके बाद वह उन्हें खेत की जुताई करने देगा और फिर उन्होंने पंचों के साथ 5,000/- रुपये की राशि जमा की थी, लेकिन फिर भी उसने उन्हें खेत की जुताई नहीं करने दी। दुर्भाग्यपूर्ण दिन सुचक का बेटा विचाराधीन क्षेत्र की ओर चला गया था और फिर वह और उसकी पत्नी और बेटा राजेश भी उक्त क्षेत्र की ओर गए थे, जहाँ उन्होंने आरोपी व्यक्तियों, अर्थात् नटाई यादव, विद्यानंद यादव, योगी यादव, भागवत यादव, लक्ष्मी यादव, भूपेंद्र यादव, राजन यादव, बिंदा यादव, मुखिया के गार्ड और मुखिया के बेटे सरोज को विभिन्न हथियारों से लैस देखा। इसके बाद, सुचक ने अपने बेटे से कहा कि वह उसका हल तोड़कर ले जाए अन्यथा उक्त आरोपी व्यक्ति उसे मार देंगे। तब दिलीप यादव ने हल खोला और वापस जाना शुरू कर दिया, हालांकि उस समय नटाई यादव ने अन्य आरोपी व्यक्तियों को सुचक और उसके बेटे को मारने के लिए प्रोत्साहित किया, जिसके बाद विद्यानंद ने सुचक के बेटे की छाती पर गोलियां चलाई थीं, जिसके परिणामस्वरूप उनका बेटा दिलीप यादव जमीन पर गिर गया था। इसके बाद, भागवत यादव ने फरसा और भूपन के साथ *भाला* से लैस होकर सुचक पर

हमला किया, हालांकि वह किनारे की ओर चला गया, जिसके परिणामस्वरूप *भाला* ने उसे उसकी तरफ मारा, जिसके बाद वह नीचे गिर गया और फिर भूपन और लक्ष्मी ने उसकी पत्नी पर हमला किया। अभियुक्त व्यक्तियों ने तब कहा था कि पिता और पुत्र दोनों की मृत्यु हो गई है, इसलिए उन्होंने जगह छोड़ने का फैसला किया और फिर वे घटना स्थल से चले गए। अ. सा.-4 ने आगे कहा है कि उसका बेटा राजेश यादव, आरोपी व्यक्तियों द्वारा हथियार लहराते हुए देखकर, पास की झाड़ियों में छिप गया था और आरोपी व्यक्तियों के जाने के बाद, वह भागते हुए घटना स्थल पर आया था और कहा था कि उसके भाई की मृत्यु हो गई है, जिसके बाद सह-ग्रामीण और अन्य लोग वहां पहुंच गए थे।

20. प्रतिपरीक्षण में अ. सा.-4 ने कहा है कि मारपीट के बाद वह बेहोश हो गया था और अस्पताल में उसे होश आया, हालांकि वह यह नहीं बता सकता कि अस्पताल में उसे कितने समय बाद होश आया। उसने यह भी कहा है कि वह उसी दिन अस्पताल से वापस नहीं आया था और तीन-चार दिनों तक अस्पताल में रहा था। इसके बाद अ. सा.-4 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में कहा था कि पुलिस ने उनका बयान तीन बार दर्ज किया था। पुलिस ने अस्पताल में पहला बयान दर्ज किया। दूसरा बयान पुलिस थाने में दर्ज किया गया और तीसरा बयान पुलिस अधीक्षक और पुलिस उपाधीक्षक की उपस्थिति में दर्ज किया गया। उसने यह भी कहा है कि घटना के दो दिन बाद पुलिस स्टेशन में उसका बयान दर्ज किया गया था। इसके बाद उन्होंने कहा कि उन्होंने पुलिस के सामने दिए गए अपने बयान में खुलासा किया था कि भागवत यादव ने उनके माथे पर *फरसा* से वार किया था और यह तथ्य उन्होंने तीनों बयानों में कहा था। अ. सा.-4 ने यह भी कहा है कि उन्होंने अपने पुनर्कथन में यह नहीं कहा था कि योगी उर्फ योगेंद्र यादव ने उनके सिर पर *लाठी* से वार किया था, जिसके परिणामस्वरूप उनका सिर क्षतिग्रस्त हो गया था। उन्होंने यह भी कहा है कि भागवत

यादव अपने हाथ में *भाला* पकड़े हुए थे और उन्होंने *फरसा* भी पकड़ा हुआ था। भागवत ने अपने दाहिने हाथ में *फरसा* पकड़ा हुआ था, जबकि दूसरे हाथ में *भाला* था। अ. सा.-4 ने कहा है कि उसे याद नहीं है कि उसने अपने फर्दबयान में यह कहा था कि भूपेंद्र यादव ने उसकी पत्नी के साथ मारपीट की थी। अ. सा.-4 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में आगे कहा है कि घटना के दिन उनके बच्चों ने उन्हें बताया था कि नतई यादव भीड़ के साथ घटना स्थल पर गए थे। अ. सा.-4 ने कहा है कि कुछ समय बाद वह राजेश और उसकी पत्नी के साथ घटना स्थल पर गया था और घटना स्थल पर पहुंचने पर वह खेत में खड़ा था और उसने अपने बेटे को 2-3 दूर से देखा था और जबकि राजेश ने भीड़ को झाड़ियों में छिपते हुए देखा तो भीड़ ने दिलीप कुमार को घेर लिया था। अ. सा.-4 ने यह भी कहा है कि आरोपी व्यक्तियों द्वारा उसके बेटे पर हमला करने के दौरान, उसने गोलियों की बौछार देखी थी, हालांकि वह अपने बेटे को बचाने नहीं गया था।

21. अ. सा.-4 ने इसके बाद कहा कि दिलीप यादव उस स्थान पर गिर गए थे जहाँ उन्हें गोली मारी गई थी, हालाँकि उन्हें याद नहीं है कि क्या अनिरुद्ध और कुलानंद उन्हें बचाने के लिए वहाँ आए थे। अ. सा.-4 ने यह भी कहा है कि आरोपी व्यक्तियों ने अपने *पायजामे* में हथियार छिपाए हुए थे और उनके बेटे पर करीब से यानी 2 से 3 हाथ की दूरी से गोलियां चलाई थीं। अ. सा.-4 ने कहा है कि उनके सिर और शरीर पर *लाठी* से हमला किया गया था। उन्होंने यह भी कहा है कि वह *धोती* और *बनियान* पहने हुए थे, जबकि उनके बेटे दिलीप ने *लुंगी* और *बनियान* पहना हुआ था और मारपीट के बाद *बनियान* और *धोती* पर खून के धब्बे मौजूद थे। अ. सा.-4 ने यह भी कहा है कि घटनास्थल पर आस-पास के लोग भी खड़े थे। अ. सा.-4 ने इसके बाद कहा कि दिलीप यादव सुबह 6 से 7 बजे खेत में जुताई करने गए थे। अ. सा.-4 ने यह भी कहा है कि उसने पुलिस को *धोती* और बरगद सहित खून से सने कपड़े दिए

थे। उन्होंने यह भी कहा है कि बरगद में *भाला* का कोई छेद नहीं था। अ. सा.-4 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में कहा है कि विद्यानंद को छोड़कर किसी अन्य आरोपी ने दिलीप पर हमला नहीं किया था और बाकी आरोपी व्यक्ति 2-3 बांस की दूरी पर चुपचाप खड़े थे। अ. सा.-4 ने कहा है कि वह उस स्थान पर गए थे जहाँ विद्यानंद खड़े थे, हालाँकि उन्होंने अपने बेटे का हाथ नहीं पकड़ा था क्योंकि वह 5-6 हाथ की दूरी पर खड़ा था और अपने बेटे के पास नहीं गया था। इसके बाद उन्होंने कहा कि किसी भी आरोपी ने उन्हें नहीं पकड़ा था, लेकिन वह अपने बेटे दिलीप को बचाने नहीं गए थे, जिसकी मौत हो गई थी। अ. सा.-4 ने यह भी कहा है कि उसे *भाला* से जख़्म लगी थी, जब वह खड़ा था और उसके बरगद पर खून के धब्बे फैल गए थे, जिसे उसने अस्पताल में 3-4 दिनों के बाद पुलिस को सौंप दिया था। उन्होंने यह भी कहा है कि उन्हें याद नहीं है कि बरगद की जब्ती सूची तैयार की गई थी या नहीं और उन्होंने उस पर हस्ताक्षर किए थे या नहीं। उन्होंने कहा है कि घटना के दौरान उन्होंने फायर आर्म से फायरिंग होते देखी थी, लेकिन उन्हें याद नहीं है कि वह सिंगल बैरल बंदूक थी या डबल बैरल। उन्होंने यह भी कहा है कि उनके बेटे की छाती पर गोली चलाई गई थी। इसके बाद उन्होंने कहा कि केवल एक आरोपी व्यक्ति के पास बंदूक थी। पी. डब्ल्यू. 4 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में कहा है कि वह यह नहीं कह सकते कि उनके बेटे दिलीप यादव के शरीर में कितने छर्रों ने छेद किया था। अ. सा.-4 ने यह भी कहा है कि उन्होंने मारवाड़ी से जो जमीन खरीदी थी, वह नतई यादव की है। अ. सा.-4 ने इसके बाद कहा कि वह अपने बेटे और पत्नी के साथ घटना स्थल पर गया था, हालांकि उसे याद नहीं है कि उसने पुलिस के सामने उक्त तथ्य का खुलासा किया था या नहीं। अ. सा.-4 ने कहा है कि उन पर भी हमला किया गया था और हमला होने पर वे नीचे गिर गए थे, जिसके बाद वे बेहोश हो गए थे, हालाँकि उन्हें याद नहीं है कि उन्हें कब होश आया, हालाँकि, उन्होंने कहा है कि उन्हें अस्पताल में होश आ गया था। उसने यह भी

कहा है कि उसके बेटे और उसकी पत्नी को भी पीटा गया था और उसकी पत्नी भी बेहोश हो गई थी, हालांकि राजेश यादव पर हमला नहीं किया गया था।

22. अ. सा.-5 अनिरुद्ध पासवान ने अपने बयान में कहा है कि घटना 14 वर्ष पूर्व प्रातः लगभग 7-8 बजे की है, जब वह अपने खेत में काम कर रहा था तथा ठेके पर लिए गए खेत से घास निकाल रहा था, उसी समय दिलीप यादव अपने खेत की जुताई करने के लिए आया था, जिसे उसने हनुमान अग्रवाल से खरीदा था, जिसके बाद पीछे से आरोपीगण नटई यादव, भागवत यादव, भूपेन्द्र यादव, महेन्द्र यादव, योगी यादव, विद्यानन्द यादव, राजेश्वर यादव, सरोज यादव, मनोज यादव, जितेन्द्र यादव तथा एक अज्ञात व्यक्ति वहां पहुंचे, जो *फरसा, लाठी* तथा देशी पिस्तौल से लैस थे। फिर, विद्यानंद यादव ने दिलीप यादव पर अपनी 3 गाँठ की पिस्तौल से गोली चलाई थी, जिससे उनकी छाती में गोली लग गई थी, जिसके बाद दिलीप यादव नीचे गिर गए थे और उनकी मौत हो गई थी। अ. सा.-5 ने यह भी कहा है कि इसके बाद शोर मच गया और दिलीप यादव के पिता और उनकी मां वहां पहुंच गए, जिसके बाद आरोपी भूपेंद्र यादव ने रवि यादव (अ. सा.-4) पर *भाला* से हमला किया था जो उनकी पसलियों में लग गया था। इसके बाद, सरोज यादव ने रवि यादव की पत्नी मूर्ति यादव पर *लाठी* से हमला किया था और जब रवि यादव नीचे गिर गए थे, तो आरोपी भागवत यादव ने उन पर *लाठी* से हमला किया था और फिर मनोज यादव ने मूर्ति देवी पर भी *लाठी* से हमला किया था। अ. सा.-5 ने यह भी कहा है कि दिलीप यादव की मौके पर ही मौत हो गई थी और उसे देखकर आरोपी लोग भाग गए। उन्होंने यह भी कहा है कि रवि यादव का छोटा बेटा राजेश यादव वहां आया था और कहा था कि उसके भाई की मौत हो गई है। इसके बाद रवि यादव के भतीजे शंभू यादव, नुनु यादव व अन्य वहां पहुंचे और घायलों को अस्पताल ले गए। अपनी प्रतिपरीक्षण में अ. सा.-5 ने कहा है कि वह सुबह से ही अपने खेत में खेती कर रहा था, सावन-भादो का समय था और

वह दिन के 12:00 बजे तक अपनी फसल की सिंचाई करता रहा, जिसके बाद उसने दिन के 12:00 बजे गोली चलने की आवाज सुनी, जिसके बाद वह घटनास्थल की ओर गया। अपनी प्रतिपरीक्षण के पैरा संख्या 12 में अ. सा.-5 ने कहा है कि उसने गोली चलते हुए देखी थी जो मृतक दिलीप यादव के सीने में लगी थी।

23. अ. सा.-6 कुलानंद यादव ने अपने बयान में कहा है कि उन्हें दिलीप यादव की मौत के संबंध में कुछ भी पता नहीं है, इसलिए उन्हें अभियोजन पक्ष द्वारा शत्रुतापूर्ण घोषित कर दिया गया था, फिर भी अभियोजन पक्ष द्वारा उनसे प्रतिपरीक्षण की गई थी, जिसके दौरान उन्होंने कहा है कि यह कोई तथ्य नहीं है कि उन्होंने पुलिस के सामने खुलासा किया था कि गोली चलने की आवाज सुनकर वह गांव के पूर्वी हिस्से में नहर के पास पहुंचे थे और आरोपी व्यक्तियों को वहां खड़े देखा था और उन्हें यह कहते हुए भी सुना था कि पिता और पुत्र दोनों की मौत हो गई है।

24. अ. सा.-7 योगेंद्र यादव एक औपचारिक गवाह है, जिसने औपचारिक एफ.आई.आर. को साबित किया है और त्रिवेणीगंज पुलिस स्टेशन के तत्कालीन पुलिस उप-निरीक्षक के हस्ताक्षर की पहचान की है और इसे प्रदर्श संख्या 1 के रूप में चिह्नित किया गया है।

25. अ. सा.-8 भागवत प्रसाद यादव ने अपने बयान में कहा है कि उसे घटना के बारे में कुछ भी पता नहीं है, इसलिए उसे पक्षद्रोही घोषित किया गया। अपर लोक अभियोजक द्वारा की गई प्रतिपरीक्षण में उसने कहा है कि उसने पुलिस के समक्ष कोई बयान नहीं दिया है, हालांकि उसे धारा 161 दं. प्र. सं. के तहत दिए गए बयान से रूबरू कराया गया था।

26. अ. सा.-9 कला देवी मृतक दिलीप यादव की पत्नी हैं और उन्होंने अपने बयान में कहा है कि यह घटना 18 साल पहले सुबह लगभग 8 से 9 बजे हुई थी। उसने कहा है कि उसके ससुर ने मारवाड़ी से जमीन खरीदी थी जिसे अनुबंध के आधार

पर नतई यादव द्वारा जुताई जा रही थी। इसके बाद, पंचायती आयोजित की गई और यह निर्णय लिया गया कि उसके ससुर खेत की जुताई के उद्देश्य से नटाई को 5,000/- रुपये की राशि देंगे, जिसके बाद उसके ससुर रवि यादव ने पंचों के साथ 5,000/- रुपये की राशि जमा की थी। उसने आगे कहा है कि शनिवार को उसका पति खेत में जुताई करने गया था जब अपीलकर्ताओं सहित आरोपी व्यक्तियों ने उसे घेर लिया था और फिर राजेश ने कहा कि उसके भाई को उनके द्वारा गोली मार दी गई है, जबकि वह भी पीछे से आ रही थी। उसने यह भी कहा है कि आरोपी व्यक्तियों ने उसके ससुर और सास पर *लाठी* से हमला किया था और भूपेंद्र यादव ने उसके ससुर रवि यादव की पसलियों पर *भाला* से वार किया था और फिर उसके सिर पर *लाठी* से हमला किया गया था। प्रतिपरीक्षण में, अ. सा.-9 ने कहा है कि उसका बयान पुलिस द्वारा घटना की तारीख को दर्ज किया गया था। उसने यह भी कहा है कि उसने पुलिस को बताया था कि उसका बहनोई राजेश यादव घटना स्थल से लौटा था और उसने उसे घटना के बारे में बताया था। इसके बाद उसने कहा कि वह भी अस्पताल गई थी जब उसकी सास मूर्ति देवी और ससुर रवि यादव को घायल हालत में इलाज के लिए ले जाया जा रहा था।

27. अ. सा.-10 कामेश चंद्र यादव एक औपचारिक गवाह हैं और उन्होंने अपने बयान में कहा है कि दिलीप यादव की हत्या 18 साल पहले हुई थी और उन्होंने मृतक की जांच रिपोर्ट पर अपने हस्ताक्षर किए थे, इसके अलावा शंभू कुमार यादव ने भी उस पर अपने हस्ताक्षर किए थे, हालांकि उन्होंने कहा है कि उन्हें घटना के बारे में पता नहीं है।

28. अ.सा.-11 बुटाई यादव सुचक का भाई है, जिससे मुख्य रूप से पूछताछ की गई है, लेकिन उससे आंशिक रूप से प्रतिपरीक्षण की गई और फिर वह आगे की प्रतिपरीक्षण के लिए नहीं आया, फिर भी उसने अपने बयान में कहा है कि दिलीप

यादव की हत्या हुई थी और घटना 18 साल पहले सुबह करीब 8-9 बजे हुई थी, जब वह अपने घर पर था। उसने कहा है कि वह शोर मचाने के बाद घटना स्थल पर गया था, जहाँ उसने देखा कि रवि यादव पर *भाला* द्वारा हमला किया जा रहा था। उन्होंने यह भी कहा है कि दिलीप यादव की मृत्यु हो गई थी और मूर्ति देवी भी घायल हो गई थीं। अ. सा.-11 ने अपीलार्थियों सहित विभिन्न हथियारों से लैस उन अभियुक्त व्यक्तियों का भी नाम लिया है, जो घटना स्थल पर पहुंचे थे। उन्होंने कहा है कि भागवत यादव कह रहे थे कि पिता और पुत्र की हत्या कर दी गई है। इसके बाद घायलों को अस्पताल ले जाया गया। अ. सा.-11 ने इसके बाद कहा कि दिलीप यादव को पसलियों में गोली लगी थी। रवि यादव की पसलियों में जख़्म लगी थी और उनके सिर से खून बह रहा था। प्रतिपरीक्षण में, अ. सा.-11 ने गाँव की एक नहर के स्थान का वर्णन किया है और कहा है कि उसे याद नहीं है कि उसने घटना से पहले 3 गाँठों की गोलीबारी की आवाज़ कब सुनी थी।

29. अ. सा.-12 के डॉक्टर विजय कुमार अग्रवाल डॉक्टर हैं, जिन्होंने मृतक दिलीप कुमार यादव के शव का पोस्टमार्टम किया है। उन्होंने अपने बयान में कहा है कि 06.09.1992 को वे चिकित्सा पदाधिकारी, अनुमंडलीय अस्पताल, सुपौल के पद पर पदस्थापित थे और उन्होंने मृतक दिलीप यादव के शव का पोस्टमार्टम किया था और उनके शरीर पर पोस्टमार्टम के घाव पाए गए। मृतक दिलीप कुमार यादव के मृत शरीर पर पाई गई जख्मों में (1) छाती की दीवार के दाहिने हिस्से में गहरे घाव 1 1/2 "x 3" x थोरैसिक गुहा, दाएं निप्पल के 3 "मध्य में उल्टे आकार में प्रवेश के घाव का संकेत देते हुए घाव थे। अ. सा.-12, विच्छेदन पर, अपने निष्कर्ष पर ध्यान देने के अलावा निम्नलिखित निष्कर्षों पर आया था, जिन्हें नीचे पुनः प्रस्तुत किया जा रहा हैः.

(i) खोपड़ी की हड्डियाँ और मस्तिष्क में मेनिन्जेस का पदार्थ पीला और बरकरार था।

(ii) हृदय के सभी कक्ष खाली थे।

(iii) फेफड़े दाहिना फेफड़ा बीच से फट गया, गोली बरामद कर ली गई।

(iv) पेट में पूर्णतः पचा हुआ भोजन कण मौजूद थे।

(v) यकृत पीला लेकिन अक्षुण्ण था।

(vi) गुर्दे अक्षुण्ण थे।

(vii) प्लीहा जमा हो गई थी।।

(viii) मूत्राशय खाली था।

मृत्यु का कारणः- आग्नेयास्त्र के कारण रक्तस्राव और सदमे के कारण हृदय श्वसन विफलता हो जाती है।

मृत्यु से लेकर पी.एम. तक का समय - 48 घंटे के भीतर।

नोट: एक सीलबंद वॉयल जिस पर मृतक का नाम है और जिस पर गोली है, उस पर मेरे हस्ताक्षर हैं, जिसे एक्सटेंशन के अनुसार कांस्टेबल को सौंप दिया गया है। अ. सा.-12 ने पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट की पहचान की है, जो उनके लिखित रूप में तैयार की गई है और उस पर उनके हस्ताक्षर भी हैं और इसे प्रदर्श संख्या 2 के रूप में चिह्नित किया गया है। पी. डब्ल्यू. 12 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में कहा है कि मृतक के नाम और उसके हस्ताक्षर वाली सीलबंद वायल, जिसमें विचाराधीन गोली थी, एक सिपाही को सौंप दी गई थी। उन्होंने यह भी कहा है कि उन्होंने अपनी रिपोर्ट में यह उल्लेख नहीं किया है कि किस प्रकार की बाहों से जख़्म लगी है। उसने यह भी कहा था कि मृत शरीर सड़ने की प्रक्रिया में था, कठोरता समाप्त हो चुकी थी और यह सितंबर का महीना था। उसने यह भी कहा कि मृत्यु के समय का निर्धारण करने के लिए रिगर मॉर्टिस एकमात्र साधन है और रिगर मॉर्टिस मौसम और जलवायु के अनुसार भिन्न होता है। अ. सा.-12 ने यह भी कहा है कि विभिन्न प्रकार की भुजाओं का वेग और

दूरी अलग-अलग होती है। उन्होंने आगे कहा कि मृतक को 6 फीट से अधिक की दूरी से गोली मारी गई थी।

30. अभियोजन पक्ष के साक्ष्य बंद करने के बाद, विद्वत विचारण न्यायालय ने 06.10.2012 को दं. प्र. सं. की धारा 313 के तहत अपीलकर्ताओं के बयान दर्ज किए, ताकि वे अपने खिलाफ साक्ष्य में दिखाई देने वाली परिस्थितियों को व्यक्तिगत रूप से स्पष्ट कर सकें, हालांकि, अपने-अपने बयानों में उन्होंने खुद को निर्दोष बताया और कहा कि वे गवाह पेश करेंगे।

31. बचाव पक्ष ने हालांकि एक बचाव पक्ष के गवाह को पेश किया है, लेकिन अपीलार्थियों के विद्वान वरिष्ठ वकील ने उस पर भरोसा नहीं किया है।

32. विद्वत विचारण न्यायालय ने विचारण में प्रस्तुत साक्ष्य की सराहना, विश्लेषण और जांच पर उपरोक्त अपीलार्थियों को अपराधों का दोषी पाया है और अपने आक्षेपित निर्णय और आदेश द्वारा उन्हें कारावास और जुर्माने की सजा सुनाई है, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है।

33. हमने विद्वान विचारण न्यायाधीश के आक्षेपित फैसले, रिकॉर्ड पर मौजूद संपूर्ण सामग्री का अवलोकन किया है और अपीलकर्ताओं के लिए विद्वान वकील और राज्य के लिए विद्वान सा.लो.अ. द्वारा किए गए प्रतिद्वंद्वी दलीलों पर गहन विचार किया है।

34. अभियोजन पक्ष के साक्ष्य के अवलोकन से पता चलता है कि दिनांक 05.09.1992 को प्रातः लगभग 8 बजे सुचक का पुत्र दिलीप कुमार यादव (मृतक) अपने खेत की जुताई करने गया था, जिसके बाद सुचक, उसकी पत्नी तथा उसका छोटा पुत्र राजेश कुमार यादव भी उसके पीछे-पीछे उक्त खेत की ओर गए, जहां अभियुक्त नटई यादव (अब मृत) ने विद्यानंद यादव (दूसरे मामले के अपीलकर्ता) को सुचक तथा उसके पुत्र की हत्या करने के लिए उकसाया, जिसके बाद विद्यानंद यादव ने सुचक के

पुत्र के सीने पर गोली चला दी, जिससे उसका पुत्र दिलीप यादव मृत अवस्था में जमीन पर गिर गया। यह कहा गया है कि पहले मामले के अपीलार्थी भी वहाँ मौजूद थे और फिर भागवत यादव ने फरसा और भूपेंद्र यादव (पहले मामले के अपीलार्थी संख्या 1) के साथ *भाला* से लैस होकर सुचक पर हमला किया था, जिसके बाद वह नीचे गिर गया था, जिसके बाद भूपेंद्र यादव और लक्ष्मी यादव (पहले मामले के अपीलार्थी संख्या 4) ने सुचक की पत्नी पर हमला किया था। हम पाते हैं कि पी. डब्ल्यू. 7 (योगेंद्र यादव) और पी. डब्ल्यू. 10 (परमेश्वर चंद्र यादव) औपचारिक गवाह हैं, जिन्होंने औपचारिक प्राथमिकी और पूछताछ रिपोर्ट को साबित कर दिया है, इसके अलावा पी. डब्ल्यू. 12 वह डॉक्टर है जिसने मृतक के शव का पोस्टमार्टम किया है। जहां तक अ. सा.-2 (नूनू लाल), अ. सा.-9 (काला देवी) और अ. सा.-11 (भूताई यादव) का संबंध है, उनके साक्ष्य से पता चलता है कि वे सुनी-सुनाई बातों के गवाह हैं। इस प्रकार, वर्तमान मामला अ. सा.-1 राजेश कुमार यादव, अ. सा.-4 रवि यादव और अ. सा.-5 अनिरुद्ध पासवान के साक्ष्य पर आधारित है। जहां तक अ. सा.-5 अनिरुद्ध पासवान का सवाल है, उसने अपनी प्रतिपरीक्षण में कहा है कि जब वह दोपहर 12 बजे तक अपनी फसलों की सिंचाई कर रहा था, तो उसने दिन में 12 बजे गोली चलने की आवाज सुनी और फिर वह घटनास्थल की ओर चला गया, जबकि तथ्य यह है कि फर्दबयान और अभिलेख पर मौजूद साक्ष्य से स्पष्ट है कि घटना सुबह 8 बजे के आसपास हुई थी, इसलिए यह संभव नहीं है कि अ. सा.-5 ने कथित घटना को विशेष रूप से विद्यानंद यादव (दूसरे मामले के अपीलकर्ता) द्वारा दिलीप यादव (मृतक) के सीने पर गोली चलाने को देखा हो, इसलिए उसकी गवाही विश्वसनीय नहीं है।

35. जहां तक अ. सा.-1 राजेश कुमार यादव का संबंध है, हम उसके साक्ष्य से पाते हैं कि वह कथित घटना का चश्मदीद गवाह है और उसने डर से घटना स्थल के पास झाड़ियों में छिप गया था, जहां से उसने पूरी घटना देखी थी और साथ ही

विद्यानंद यादव (दूसरे मामले के अपीलार्थी) को अपनी पीठ से पिस्तौल निकालते और फिर दिलीप यादव (मृतक) की छाती पर गोली चलाते हुए भी देखा था, जिससे वह घायल हो गया और जमीन पर गिर गया। यद्यपि अपीलकर्ताओं के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता ने अ. सा.-1 के साक्ष्य में इस आशय का विरोधाभास लाने का प्रयास किया है कि अ. सा.-1 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में कहा है कि विद्यानंद यादव (दूसरे मामले का अपीलकर्ता) अपने हाथ में बंदूक लेकर रघुनी यादव के खेत में पहुंचा था, जिसके बाद उसने वहां उपस्थित लोगों को डराने के लिए गोली चलाई थी और गोली चलने की आवाज सुनकर वह अचेत हो गया था, तथापि अ. सा.-1 के साक्ष्य से हम पाते हैं कि उसने कहा है कि जिस समय अभियुक्तगण उसके पिता पर हमला कर रहे थे, अर्थात विद्यानंद यादव (दूसरे मामले का अपीलकर्ता) द्वारा मृतक के सीने पर गोली चलाए जाने के बाद, अपीलकर्ता विद्यानंद यादव ने लोगों को डराने के लिए अपने हाथ में पकड़ी बंदूक से गोली चलाई थी और उसके बाद ही वह अचेत हो गया था, अतः हम उसके कथन में कोई विरोधाभास नहीं पाते हैं, अतः उसके साक्ष्य को अविश्वसनीय नहीं कहा जा सकता है। अ. सा.-4 के संबंध में, अपीलकर्ता के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता रवि यादव ने बताया कि अ. सा.-1 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में कहा है कि उसके पिता पर भाला फेंके जाने के बाद वे बेहोश हो गए थे और उन पर अन्य लोगों ने हमला किया था तथा अस्पताल में उन्हें होश आया था, साथ ही अ. सा.-4 ने भी अपनी गवाही में कहा है कि हमला किए जाने के तुरंत बाद वे गिर गए थे तथा अस्पताल में उन्हें होश आया था, तथापि हम पाते हैं कि अपीलकर्ता अ. सा.-4 के साक्ष्य में कोई बड़ी विसंगति नहीं निकाल पाए हैं तथा इसके अलावा जब अ. सा.-4 पर हमला किया गया था, तब तक विद्यानंद यादव (दूसरे मामले का अपीलकर्ता) मृतक की छाती पर गोली चला चुका था, इस प्रकार हम पाते हैं कि अ. सा.-4 ने सुसंगत रूप से गवाही दी है। यह एक अच्छी तरह से स्थापित कानून है कि अभियोजन पक्ष के साक्ष्य में मामूली विचलन, यदि कोई

भी महत्वहीन प्रकृति का है, तो अभियोजन पक्ष के मामले पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकता है, यदि अपीलार्थियों के अपराध को स्थापित करने के लिए मुकदमे में भारी अपराध साबित करने वाले साक्ष्य पेश किए गए हैं। यह उल्लेख करना अनुचित नहीं होगा कि यह बचाव का मामला है, जैसा कि अपीलकर्ताओं के वरिष्ठ अधिवक्ता विद्वान ने तर्क दिया कि अ.सा.-4 रवि यादव और उनकी पत्नी मूर्ति देवी (अ.सा.-3) पर हमला नहीं किया गया था, अतः मामले के इस दृष्टिकोण से अ.सा.-4 बेहोश नहीं हो सकता था।

36. इस प्रकार हम पाते हैं कि विद्यानंद यादव (दूसरे मामले के अपीलकर्ता) द्वारा दिलीप कुमार यादव (मृतक) के सीने पर गोली चलाने, जिसके कारण उसकी मृत्यु हुई, के संबंध में एफआईआर में अभियोजन पक्ष का कथन, मुकदमे में प्रस्तुत किए गए प्रत्यक्ष साक्ष्यों, विशेष रूप से पीडब्लू 1 राजेश कुमार यादव और अ.सा. 4 रवि यादव के साक्ष्यों से पूरी तरह समर्थित है और वही चिकित्सा साक्ष्यों से भी पुष्ट होता है क्योंकि अ.सा. 12 डॉ. विजय कुमार अग्रवाल, जिन्होंने मृतक के शव का पोस्टमार्टम किया था, ने न केवल छाती की दीवार के दाहिने तरफ 1 ½″x ¾″ x वक्ष गुहा गहरा, दाहिने निप्पल के ठीक मध्य में 3″ गहरा घाव पाया है, जो प्रवेश के घाव को दर्शाता है बल्कि यह भी कहा है कि मृत्यु का कारण आग्नेयास्त्र के कारण रक्तस्राव और सदमे के कारण हृदय-श्वसन विफलता है, इस तथ्य के अलावा कि उक्त डॉक्टर ने शव से एक गोली भी निकाली थी और उसे कांस्टेबल को सौंप दिया था।

यह एक स्थापित कानून है कि प्रत्यक्षदर्शी की गवाही पर विचार करते समय संख्या या मात्रा नहीं बल्कि गुणवत्ता महत्वपूर्ण होती है, भले ही वह एकमात्र/एकल गवाह हो, जो कि भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 134 का अधिदेश और तर्क है। वर्तमान मामले में, जहां तक अ.सा. 1 और अ.सा. 4 के साक्ष्य का संबंध है, उनके साक्ष्य सत्य, ठोस, विश्वसनीय और भरोसेमंद हैं, इसलिए उनकी गवाही पर

भरोसा करते हुए, हम सुरक्षित रूप से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि विद्यानंद यादव (दूसरे मामले के अपीलकर्ता) के खिलाफ लगाए गए आरोप, कि उन्होंने दिलीप यादव (मृतक) की छाती पर गोली चलाई, जिससे उसकी मृत्यु हो गई, किसी भी उचित संदेह से परे साबित हुआ है, इस प्रकार जहां तक आईपीसी की धारा 302 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत विद्यानंद यादव (दूसरे मामले के अपीलकर्ता) की सजा का संबंध है, हमें सजा और सजा के आरोपित फैसले में कोई स्पष्ट त्रुटि नहीं मिलती है, इसलिए इसमें किसी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है। हम यह भी पाते हैं कि विद्यानंद यादव (दूसरे मामले के अपीलकर्ता) को भारतीय दंड संहिता की धाराओं 147, 148, 323, 324, 307 और 120बी के तहत एलडी ट्रायल जज द्वारा दोषी ठहराया गया है, हालांकि इस तथ्य के मद्देनजर कि हमने आईपीसी की धारा 302 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत उनकी सजा को बरकरार रखा है, यह इस तथ्य को छोड़कर महत्व खो देता है कि साक्ष्य के एक मात्र अवलोकन से पता चलता है कि हालांकि यह साबित हो गया है कि विद्यानंद यादव (दूसरे मामले के अपीलकर्ता) ने दिलीप यादव (मृतक) की छाती पर गोली चलाई थी जिससे उसकी मौत हो गई, हालांकि यह दिखाने के लिए कोई सबूत नहीं है कि उन्होंने सूचना देने वाले या किसी अन्य परिवार के सदस्य पर हमला किया था।

37. यहाँ पर, हम यह जोड़ना चाहेंगे कि जहां तक पहले मामले के अपीलकर्ताओं का सवाल है, हालांकि उनमें से कुछ पर आरोप है कि उन्होंने सुचक (अ. सा.-4) और उसकी पत्नी पर हमला किया, तथापि अभियोजन पक्ष घायल गवाहों की कोई जख़्म रिपोर्ट रिकॉर्ड पर लाने/प्रदर्श करने में विफल रहा है, उनका इलाज करने वाले डॉक्टर का साक्ष्य पेश करना तो दूर की बात है, इस प्रकार हम पाते हैं कि मामले के रिकॉर्ड पर उक्त घटना में उनकी मिलीभगत दिखाने के लिए कोई सबूत उपलब्ध नहीं है, इसलिए पहले मामले के अपीलकर्ताओं को उनके खिलाफ लगाए गए अपराधों के

लिए दोषी ठहराना सुरक्षित नहीं होगा, विशेष रूप से अ. सा.-4 (रवि यादव) की गवाही के मद्देनजर, जिसने अपनी प्रतिपरीक्षण में स्पष्ट रूप से कहा है कि विद्यानंद यादव (दूसरे मामले के अपीलकर्ता) को छोड़कर किसी अन्य आरोपी ने दिलीप यादव पर हमला नहीं किया था और बाकी आरोपी व्यक्ति 2-3 बांस की दूरी पर चुपचाप खड़े थे, जिसका अर्थ है कि अपीलकर्ता प्रथम मामले की कथित घटना में कोई भूमिका नहीं थी और इसके अलावा, हम पाते हैं कि न तो कोई ऐसा साक्ष्य प्रस्तुत किया गया है जिससे यह पता चले कि उक्त अपीलकर्ताओं के बीच गैरक़ानूनी कार्य करने के लिए सहमति थी और न ही यह साबित करने के लिए कोई साक्ष्य है कि अपीलकर्ताओं के बीच गैरक़ानूनी कार्य करने के लिए कोई समझौता हुआ था, इसलिए भा.द.सं. की धारा 120-बी के तहत साजिश का आरोप भी साबित नहीं होता है, परिणामस्वरूप, प्रथम मामले के अपीलकर्ताओं को भा.द.सं. की धारा 120 बी की सहायता से भा.द.सं. की धारा 302 के तहत भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। अ. सा.-4 (रवि यादव) की गवाही को ध्यान में रखते हुए, जिसने अपनी प्रतिपरीक्षण में स्पष्ट रूप से कहा है कि विद्यानंद यादव (दूसरे मामले के अपीलार्थी) को छोड़कर किसी भी अन्य आरोपी ने दिलीप यादव पर हमला नहीं किया था और बाकी आरोपी व्यक्ति 2 से 3 बांस की दूरी पर चुपचाप खड़े थे, जिसका अर्थ है कि पहले मामले के अपीलार्थियों की कथित घटना में कोई भूमिका नहीं थी और इसके अलावा, हम पाते हैं कि न तो उपरोक्त अपीलार्थियों के बीच गैरक़ानूनी कार्य करने के इच्छित उद्देश्य के लिए मन की बैठक दिखाने के लिए कोई सबूत सामने लाया गया है और न ही यह स्थापित करने के लिए कोई सबूत है कि अपीलार्थियों के बीच एक गैरकानूनी कार्य करने के लिए एक समझौता था, इसलिए आई. पी. सी. की धारा 120-बी के तहत साजिश का आरोप भी साबित नहीं होता है, नतीजतन, पहले मामले के अपीलार्थियों को आई. पी. सी. की धारा 120-बी की सहायता से आई. पी. सी. की धारा 242 के तहत भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता है।

निस्संदेह, हम इस विचारित राय के हैं कि विद्वान विचारण न्यायाधीश को संदेह का लाभ देकर पहले मामले के अपीलकर्ताओं को बरी करना आवश्यक था, हालांकि विद्वान विचारण न्यायाधीश ने साक्ष्य, विशेष रूप से अ.सा.-4 के साक्ष्य को सही परिप्रेक्ष्य में न देखकर गलती की है, इसलिए जहां तक पहले मामले यानी आपराधिक अपील (डीबी) संख्या 173/2016 के अपीलकर्ताओं का संबंध है, दोषसिद्धि और सजा का आक्षेपित निर्णय अपास्त किए जाने योग्य है।

38. अब अपीलार्थियों के विद्वान वरिष्ठ वकील द्वारा उठाए गए मुद्दों पर आते हुए, सबसे पहले यह तर्क दिया गया है कि जांच अधिकारी से पूछताछ न करने से अपीलार्थियों के प्रति बहुत पूर्वाग्रह पैदा हुआ है। इस संबंध में यह कहना पर्याप्त होगा कि केवल जांच अधिकारी से पूछताछ न करने के कारण बचाव पक्ष पर हुए किसी पूर्वाग्रह की ओर इशारा किए बिना इस तरह के मुद्दे पर बहस करने का कोई आधार नहीं होगा। वास्तव में, बचाव पक्ष अ. सा.-1 और अ. सा.-4 की मौखिक गवाही पर कोई संदेह उठाने में विफल रहा है और इसके अलावा, वह उक्त गवाहों की गवाही में कोई विरोधाभास नहीं निकाल पाया है, इस प्रकार वर्तमान मामले में जांच अधिकारी से पूछताछ न करना अभियोजन पक्ष के मामले के लिए घातक नहीं होगा। इस प्रकार, हमें यह मानने में कोई संकोच नहीं है कि अ. सा.-1 और अ. सा.-4 की ठोस, विश्वसनीय और अडिग गवाही की पृष्ठभूमि में, जांच अधिकारी से पूछताछ न करने का मुद्दा उस पृष्ठभूमि में चला जाता है और वर्तमान मामले के तथ्यों में यह एक महत्वपूर्ण विचार नहीं है।

39. जहाँ तक जाँच अधिकारी की जाँच न करने के मुद्दे पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित कानून का सवाल है, हम ***बिहारी प्रसाद बनाम बिहार राज्य*** के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय का संदर्भ देना चाहेंगे, जिसकी रिपोर्ट ***(1996) 2 एससीसी 317*** में दी गई है, जिसमें यह माना गया है कि

जाँच अधिकारी की जाँच न करना अभियोजन पक्ष के मामले के लिए घातक नहीं है, खासकर तब जब अभियुक्त को कोई पूर्वाग्रह होने की संभावना न हो। उक्त निर्णय में यह भी स्पष्ट किया गया है कि अभियुक्त द्वारा झेले जाने वाले पूर्वाग्रह का मामला मामले के तथ्यों पर निर्भर होना चाहिए और ऐसा कोई सार्वभौमिक सीधा-सादा फार्मूला नहीं बनाया जाना चाहिए कि जांच अधिकारी की जांच न करने से आपराधिक मुकदमा प्रभावित होता है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने ***बहादुर नायक बनाम बिहार राज्य*** के मामले में ***(2000) 9 एससीसी 153*** में दिए गए एक अन्य निर्णय में यह विचार व्यक्त किया है कि अभियोजन पक्ष के गवाह के रूप में जांच अधिकारी की जांच न करने का कोई महत्व नहीं है, जब कोई भौतिक विरोधाभास सामने नहीं आया है और यह भी नहीं दिखाया गया है कि इस तरह की जांच न करने के कारण अपीलकर्ता को क्या पूर्वाग्रह हुआ है, खासकर ऐसी स्थिति में जब अभियुक्त अभियोजन पक्ष के गवाहों की विश्वसनीयता को हिला नहीं पाया हो।

40. जहां तक प्रयुक्त हथियार की प्रकृति का निर्धारण न होने तथा घटनास्थल का पता न लगने का प्रश्न है, हम पाते हैं कि अ.सा.-1 तथा अ.सा.-4 के भारी साक्ष्य के मद्देनजर उक्त मुद्दा कोई महत्व नहीं रखता। अब अपीलार्थियों के विद्वान वरिष्ठ वकील द्वारा उठाए गए दूसरे मुद्दे पर आते हुए कि फरदबेयान को न तो प्रदर्शित किया गया है और न ही साबित किया गया है, हम पाते हैं कि अ. सा.-7 योगेंद्र यादव ने औपचारिक प्राथमिकी साबित कर दी है और तत्कालीन पुलिस उप-निरीक्षक, त्रिवेणीगंज पुलिस स्टेशन के हस्ताक्षर की भी पहचान की है, जिसे प्रदर्श-1 के रूप में भी चिह्नित किया गया है और फरदबेयान उसी का एक हिस्सा है। इसके अलावा, हम ***कृष्णा मोची एवं अन्य बनाम बिहार राज्य*** के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणियों का उल्लेख करना चाहेंगे, जिसकी रिपोर्ट ***(2002) 6 एससीसी 81*** में दी गई है, जिसमें यह अभिनिर्धारित किया गया है कि यदि प्रथम सूचना रिपोर्ट साबित नहीं भी होती है, तो

भी यह बरी करने का आधार नहीं होगा, बल्कि मामला अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य पर निर्भर करेगा। वर्तमान मामले में, अ. सा.-1 और अ. सा.-4 ने फर्दबयान/एफआईआर में वर्णित घटना का पूरी तरह से समर्थन किया है, जहां तक दूसरे मामले के अपीलकर्ता के खिलाफ लगाए गए आरोपों का संबंध है, इसलिए केवल इसलिए कि फर्दबयान प्रदर्शित नहीं किया गया है, इससे न तो अपीलकर्ताओं को कोई पूर्वाग्रह हुआ है और न ही इससे कोई भौतिक अंतर पड़ता है।

41. इस प्रकार, पूरे मामले के समग्र परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, तथ्यों और परिस्थितियों की समग्रता से उभर कर, जैसा कि ऊपर संकेत दिया गया है, हम संदेह का लाभ देते हुए, पहले मामले के सभी अपीलकर्ताओं यानी आपराधिक अपील (खंड पीठ) संख्या 173/2016 के अपीलकर्ताओं को बरी करते हैं और सत्र परीक्षण संख्या 138/1994 में विद्वान विचारण न्यायाधीश द्वारा पारित क्रमशः दिनांक 29.01.2016 और 09.02.2016 को उनकी दोषसिद्धि और सजा के फैसले को खारिज करते हैं, परिणामस्वरूप उक्त अपील स्वीकार की जाती है। पहले मामले के अपीलार्थी, अर्थात् (1) भूपेंद्र यादव (2) भागवत यादव (3) राजेंद्र यादव (4) लक्ष्मी यादव (5) बिनोद यादव (6) योगेंद्र यादव (7) महेंद्र यादव, क्रमशः जमानत पर हैं, इसलिए उन्हें उनके जमानत बांड के दायित्व से मुक्त कर दिया जाता है।

42. जहां तक विद्यानंद यादव (दूसरे मामले के अपीलार्थी) का संबंध है, उपरोक्त तथ्यों और परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य के आधार पर और ऊपर उल्लिखित कारणों के लिए, हम पाते हैं कि कथित घटना में उक्त अपीलार्थी (विद्यानंद यादव) के अपराध के बारे में संदेह पैदा करने का कोई कारण नहीं है, जो सभी उचित संदेहों से परे साबित होता है, इसलिए हम विद्यानंद यादव (दूसरे मामले के अपीलार्थी) को दोषी ठहराने और सजा देने के आक्षेपित फैसले में कोई त्रुटि स्पष्ट नहीं पाते हैं, इसलिए

इसमें किसी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है। तदनुसार, उक्त अपील अर्थात आपराधिक अपील (खंड पीठ) संख्या 315/2016 खारिज की जाती है और अपीलकर्ता (विद्यानन्द यादव), जो पहले से ही हिरासत में है, को शेष सजा अर्थात भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत आजीवन कारावास तथा 10,000/- रुपये का जुर्माना और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत 3 वर्ष का कठोर कारावास की सजा भुगतने का निर्देश दिया जाता है, हालांकि दोनों सजाएं एक साथ चलेंगी।

(मोहित कुमार शाह, न्यायमूर्त्ति)

मैं सहमत हूँ।

नानी तागिया, न्यायमूर्त्ति:

(नानी तागिया, न्यायमूर्त्ति)

सोनल/-

खंडन (डिस्क्लेमर)- स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नही किया जा सकता। समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।